

अल्लाह तआला का आदेश  
وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ  
رُءُوفُونَ

(सूर: मोमेनून :9)

अनुवाद: और वे लोग जो अपनी  
अमानतों और अपने वादों की  
रक्षा करने वाले हैं।

वर्ष- 10  
अंक - 50  
मूल्य  
600 रुपए  
वार्षिक

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ



संपादक  
शेख मुजाहिद  
अहमद  
उप संपादक  
सय्यद मुहियुद्दीन  
फ़रीद

अखबार-ए-अहमदिया

रुहानी खलीफ़ा इमाम जमाअत  
अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर  
अहमद साहिब खलीफ़तुल मसीह  
ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला  
बिनसिहिल अज़ीज सकुशल हैं।  
अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह  
तआला हुज़ूर को सेहत तथा  
सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण  
आप पर अपना फ़जल नाज़िल  
करता रहे। आमीन

19 जमादिउल सानी, 1446-47 हिज्री कमरी, 11 फ़तह 1404 हिज्री शम्सी, 11 दिसम्बर 2025 ई.

## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

जो वादा करके मुकर जाता है, वह खालिस  
मुनाफिक (ढोंगी) है।

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ  
اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَرْبَعُ خِصَالٍ مَنْ كُنَّ فِيهِ كَانَ مُنَافِقًا  
خَالِصًا: مَنْ إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ، وَإِذَا عَاهَدَ غَدَرَ،  
وَإِذَا خَاصَمَ فَجَرَ، وَمَنْ كَانَتْ فِيهِ خِصْلَةٌ مِنْهُنَّ كَانَتْ فِيهِ خِصْلَةٌ  
مِنَ النِّفَاقِ حَتَّى يَكُونَ مِنْهَا

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से

रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम  
ने फ़रमाया: चार आदतें जिसमें होंगी, वह तो पक्का खरा  
मुनाफिक होगा। जब बोले तो झूठ बोले, जब वादा करे तो  
उल्लंघन करे, जब कोई समझौता करे तो धोखा दे और  
जब झगड़ा करे तो गाली-गलौज पर आ जाए। जिसमें  
इन आदतों में से कोई एक आदत हो, तो उसमें नफाक  
(पाखंड) की आदत है, जब तक उसे न छोड़ दे।

وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي الْحُسَيْنِ قَالَ بَايَعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ  
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبْلَ أَنْ يُبْعَثَ وَبَقِيَتْ لَهُ بَقِيَّةٌ فَوَعَدْتُهُ أَنْ آتِيَهُ  
بِهِ فِي مَكَانِهِ فَنَسِيْتُ فَذَكَرْتُ بَعْدَ ثَلَاثِ أَيَّامٍ فَآذَانُ مَكَانِهِ فَقَالَ  
لَقَدْ شَقَقْتُ عَلَى آكَا هُنَا مُنْذُ ثَلَاثِ أَيَّامٍ أَنْتَ ظُرْتُكَ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी अल-हमसा से  
रिवायत है कि पैगंबरी के आरंभ से पहले, मैंने आप  
सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से खरीद-बिक्री की और  
आपका कुछ बकाया रह गया। मैंने वादा किया कि आप  
उसी जगह ठहरें। इसके बाद मैं भूल गया। अचानक मुझे  
तीन दिन बाद याद आया, तो क्या देखता हूँ कि आप उसी  
जगह खड़े हुए हैं। आपने सिर्फ़ इतना फ़रमाया: तुमने मुझे  
कठिनाई में डाल दिया, मैं यहाँ तीन दिन से तुम्हारी प्रतीक्षा  
कर रहा हूँ।

(मिशकात, किताब अल-आदाब, बाब अल-  
वअद)

मनुष्य खुदा तआला की सभी अमानतों और उसी प्रकार सृष्टि की सभी अमानतों  
और वायदों का पालन करे।

## हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

वह (मोमिन) अपने मामलों में, चाहे खुदा तआला के साथ हों या सृष्टि के साथ, बेलगाम और बेफिक्र नहीं  
होते, बल्कि इस डर से कि कहीं खुदा तआला के यहाँ किसी आरोप के दायरे में न आ जाएँ, अपनी अमानतों और  
वायदों का दूर-दूर तक ध्यान रख लेते हैं और हमेशा अपनी अमानतों और वायदों की जाँच करते रहते हैं और तक्का  
(संयम) की दूरबीन से उसकी आंतरिक स्थिति को देखते रहते हैं ताकि ऐसा न हो कि छिपकर उनकी अमानतों और  
वायदों में कोई कमी रह जाए। और जो अमानतें खुदा तआला की उनके पास हैं, जैसे सभी शक्तियाँ और सभी  
अंग, प्राण और धन और इज्जत वगैरह, उनको यथासंभव अपनी तक्का (संयम) की पाबंदी बहुत सावधानी से  
अपने-अपने स्थान पर प्रयोग करते रहते हैं। और जो वादा ईमान लाने के समय खुदा तआला से किया है, पूरी  
सच्चाई से यथासंभव उसे पूरा करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। इसी प्रकार जो अमानतें सृष्टि की उनके पास हों या  
ऐसी चीजें जो अमानतों के हुकम में हों, उन सब में यथाशक्ति तक्का (संयम) की पाबंदी से कार्यरत रहते हैं। यदि  
कोई विवाद हो जाए तो तक्का (संयम) को ध्यान में रखकर उसका फैसला करते हैं, भले ही उस फैसले में हानि उठा  
लें... प्रकट है कि खुदा तआला की अमानतों और ईमानी वायदों का यथासंभव पालन करना और सिर से पैर तक  
जितनी शक्तियाँ और अंग हैं, जिनमें प्रकट रूप से आँखें और कान और हाथ और पैर और दूसरे अंग हैं और  
आंतरिक रूप से हृदय और दूसरी शक्तियाँ और आचरण हैं, उनको जहाँ तक शक्ति हो ठीक-ठीक आवश्यकता  
के स्थान पर प्रयोग करना और अनुचित स्थानों से रोकना और उनके गुप्त हमलों से सावधान रहना और उसी के  
सामने प्राणियों के अधिकारों का भी ध्यान रखना, यह वह तरीका है जिससे मनुष्य की सारी आत्मिक सुंदरता जुड़ी  
हुई है और खुदा तआला ने पवित्र कुरआन में तक्का (संयम) को वस्त्र के नाम से संबोधित किया है। इस प्रकार "तक्का  
(संयम) का वस्त्र" पवित्र कुरआन का शब्द है। यह इस बात की ओर संकेत है कि आत्मिक सुंदरता और आत्मिक  
आभूषण तक्का (संयम) से ही उत्पन्न होता है। और तक्का (संयम) यह है कि मनुष्य खुदा तआला की सभी अमानतों  
और ईमानी वादे और उसी प्रकार सृष्टि की सभी अमानतों और वायदों का यथासंभव पालन करे, अर्थात् उनके सूक्ष्म

शेष पृष्ठ 09 पर

इस्लाम अमानत, ईमानदारी और समझौतों की पाबंदी को विशेष महत्व देता है।  
(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद, खलीफ़तुल मसीह सानी अल्-मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूर अल-मोमिनून की आयत  
9 "और वे लोग जो अपनी अमानतों और अपने वायदों की रक्षा करने वाले हैं" की  
व्याख्या में फ़रमाते हैं: वादे पूरे करने का रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम  
को इतना ध्यान रहता था कि अभी आपने पैगंबरी का दावा भी नहीं फ़रमाया था कि  
जनजातीय लड़ाइयों और दैनिक आपसी झगड़ों और फसादों को देखकर मक्का के कुछ  
युवकों ने एक संगठन बनाया जिसका उद्देश्य यह था कि वह पीड़ितों की सहायता किया  
करेगा। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी इस सभा में सम्मिलित हुए  
और सबने मिलकर यह शपथ खाई कि जब तक सागर में पानी की एक बूंद तक भी  
विद्यमान है, वह सदैव पीड़ितों की सहायता करेंगे और उनके अधिकार उनको  
अत्याचारी से दिलवाने का प्रयास करेंगे। और यदि वह ऐसा नहीं कर सकेंगे तो अपने

पास से पीड़ित का अधिकार अदा करेंगे। यह संगठन जो पीड़ितों की सहायता और  
उनकी अमानत का भार लेकर उठा था, उसने क्या काम किया और किस प्रकार  
पीड़ितों की सहायता की? इस बारे में ऐतिहासिक रूप से कुछ अधिक जानकारी नहीं  
मिलती, परंतु पैगंबरी के दावे के बाद जब मक्का के लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो  
अलैहि व सल्लम के जानलेवा शत्रु बन गए, एक व्यक्ति जिसने अबू जहल से कुछ  
रुपया लेना था परंतु वह देता नहीं था, रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम  
के पास आया और उसने निवेदन किया कि आप हिल्फुल फुज़ूल में सम्मिलित रह चुके  
हैं और आपने उसकी शपथ खाई थी कि सदैव पीड़ितों की सहायता फरमाएँगे, मैं  
आपको आपका वायदा याद दिलाते हुए निवेदन करता हूँ कि मेरा कुछ रुपया अबू  
जहल ने देना है, आप उसके पास चलें और मुझे यह रुपया दिला दें। जब उसने यह  
शेष पृष्ठ 09 पर

**ख़ुतब: जुमअ:**

"ये वादे भी खुदा तआला की ओर से ही हैं कि जो व्यक्ति खुदा तआला के लिए देगा, मैं उसे कई गुना बरकत दूँगा। दुनिया में ही उसे बहुत कुछ मिलेगा और मरने के बाद परलोक का प्रतिफल भी देख लेगा कि कितना आराम प्राप्त होता है। संक्षेप में इस समय मैं इस बात की ओर तुम सभी का ध्यान दिलाता हूँ कि इस्लाम की उन्नति के लिए अपने धनों को खर्च करो।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जमाअत को प्रेरित किया कि एक कोष तैयार करें ताकि हम अहमदियत और इस्लाम के संदेश को दुनिया के कोने-कोने में पहुँचाएँ और जमाअत के संगठन को और अधिक मज़बूत करें ताकि विरोधियों की कुचालों और शोर-शराबे का हम निवारण कर सकें और जमाअत के विरुद्ध जो प्रचार हो रहा है उसे गलत सिद्ध करें और केवल यही नहीं कि गलत सिद्ध करें बल्कि प्रचार का अधिकार भी अदा करें।

अहरार का दावा था कि हम क़ादियान की ईट से ईट बजा देंगे। अहमदियत को विश्व पृष्ठ से मिटा देंगे और आज तक ये नारे हमारे विरोधी लगाते हैं...

इन नारों का उत्तर हर साल जमाअत की प्रगति से दिया जाता है। खुदा तआला की कृपाओं से दिया जाता है। जमाअत में प्रतिज्ञा करके सम्मिलित होने वाले लोग ही इसका उत्तर हैं।

और आज दो सौ बीस (220) देशों में फैला हुआ जमाअत की प्रगति इसका उत्तर है कि देखो! तुम यह नारा लगाते थे कि विश्व पृष्ठ से मिटा देंगे परंतु खुदा तआला के ये अनुग्रह हैं कि जमाअत प्रगति पर प्रगति करती चली जा रही है।

आज भी प्रत्येक अहमदी जो वास्तविक रूप से हृदय से बलिदान करने वाला है, यह अनुभव करता है और जो बलिदान करने वाले हैं वे अपने घटनाक्रम भी मुझे लिखते हैं।

आश्चर्य होता है कि किस प्रकार खुदा तआला ने उन्हें बलिदान करने की सुविधा दी और किस प्रकार उनके विश्वासों को दृढ़ किया। अपनी इबादतों के स्तर को भी बढ़ाएँ और ऊँचा करें।

धन का बलिदान करके यह न समझ लेना चाहिए कि हम इबादतों से मुक्त हो गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नमाज़, रोज़ा भी धन के बलिदानों के साथ आवश्यक है।

देखें! जिस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खुदा तआला ने अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और धन का बलिदान करने वाले दिए थे, उसी प्रकार इस युग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी अपने स्वामी की अनुसरण करने के कारण ऐसे सेवक प्रदान किए जो हर चीज़ बलिदान करने के लिए तैयार थे और उन्होंने अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु का उदाहरण बनकर दिखाया।

ऐसे घटनाक्रम देखकर न केवल नए अहमदियों के विश्वास दृढ़ होते हैं बल्कि हमारे जो पुराने अहमदी हैं उनके भी विश्वास दृढ़ होते हैं। और हमें भी यह सोचना चाहिए कि किस प्रकार खुदा तआला इन लोगों का मार्गदर्शन करता है।

तहरीक-ए-जदीद के इक्यानवें (91) वर्ष के दौरान जमाअत के सदस्यों की ओर से प्रस्तुत किए जाने वाले धन के बलिदानों का उल्लेख और बानवें (92) वर्ष के आरंभ की घोषणा।

बीते वर्ष के दौरान जमाअत अहमदिया विश्वव्यापी को तहरीक-ए-जदीद में 55.19 करोड़ पाउंड का बलिदान प्रस्तुत करने की सुविधा मिली। यह प्राप्ति बीते वर्ष से पंद्रह (15) लाख चौंसठ (64) हज़ार पाउंड अधिक है।

विभिन्न देशों से संबंध रखने वाले निष्ठावान अहमदियों की ओर से प्रस्तुत किए जाने वाले धन के बलिदानों से संबंधित विश्वास-वर्धक घटनाक्रम का वर्णन।

**ख़ुतब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनसिहिल अज़ीज़, दिनांक 07 नवम्बर 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)**

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ. الْحَمْدُ لِلَّهِ  
رَبِّ الْعَالَمِينَ. الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ. مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ.  
إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ. صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ  
وَلَا الضَّالِّينَ

مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلٍ فِي كُلِّ سَنَابِلَةٍ مِائَةٌ حَبَّةٌ وَاللَّهُ يُضْعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ.  
(البقرة: 262)

इस आयत का अनुवाद यह है कि जो लोग अपने धनों को खुदा तआला के मार्ग में खर्च करते हैं, उनके इस कर्म की स्थिति उस दाने की स्थिति के समान है जो सात बालें उगाएँ और प्रत्येक बाल में सौ दाने हों। और खुदा तआला जिसके लिए चाहता है, उसे इससे भी अधिक बढ़ा-चढ़ाकर देता है और खुदा तआला विस्तार देने वाला और अत्यंत ज्ञानी है।

एक नवंबर से खुदा तआला की कृपा से जमाअत का तहरीक-ए-जदीद का नया आर्थिक वर्ष आरंभ होता है। इस संदर्भ में तहरीक-ए-जदीद के नए वर्ष

की घोषणा भी की जाती है और बीता हुआ वर्ष जो गुज़रा है उसके धन के बलिदानों का भी उल्लेख होता है जो जमाअतों की ओर से हुए हैं। इसी प्रकार धन के बलिदान की महत्ता के बारे में भी कुछ वर्णन होता है। यह वर्णन करने से पहले बलिदानों की महत्ता और तहरीक-ए-जदीद का संक्षिप्त पृष्ठभूमि वर्णन कर देता हूँ।

तहरीक-ए-जदीद का आरंभ 1934 ई. में हुआ था। कुछ नए आने वाले हैं, कुछ युवा हैं। बच्चों को ज्ञान नहीं होगा इसलिए बता देता हूँ कि तहरीक-ए-जदीद का जैसा कि मैंने कहा आरंभ 1934 ई. में हुआ था जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया था। इसका कारण यह बना था कि उस समय जमाअत के विरुद्ध अहरार ने एक उपद्रव खड़ा किया था और बड़ा शोर मचाया था। विरोध का एक तूफान था और यह नारा था कि हम अहमदियत को विश्व पृष्ठ से मिटा देंगे। क़ादियान का नाम-निशान भी शेष नहीं रहेगा। इसकी ईट से ईट बजा देंगे। इसी प्रकार स्वर्गीय कब्रिस्तान जहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मकबरा है, उसकी अनादर का भी कार्यक्रम था। यह तो उन लोगों के लिए सामान्य बात है। उस समय भी जिस प्रकार सुरक्षा देनी चाहिए थी, सरकार जमाअत को सुरक्षा नहीं दे रही थी बल्कि यह कहना उचित होगा कि

विरोधियों का समर्थन कर रही थी। ऐसे समय में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जमाअत को प्रेरित किया कि एक कोष तैयार करें ताकि हम अहमदियत और इस्लाम के संदेश को दुनिया के कोने-कोने में पहुँचाएँ और जमाअत के संगठन को और अधिक मजबूत करें ताकि विरोधियों की कुचालों और शोर-शराबे का हम निवारण कर सकें और जमाअत के विरुद्ध जो प्रचार हो रहा है उसे गलत सिद्ध करें और केवल यही नहीं कि गलत सिद्ध करें बल्कि प्रचार का अधिकार भी अदा करें क्योंकि अब तक जो प्रचार का अधिकार हमें अदा करना चाहिए था, वह हमने उस गंभीरता से अदा नहीं किया था जो होनी चाहिए थी। अतः इस सोच के साथ हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने तहरीक-ए-जदीद की घोषणा फ़रमाई थी और यह भी फ़रमाया था कि देश में भी और दुनिया में भी हमने इस्लाम और अहमदियत के संदेश को फैलाना है ताकि शत्रु हमारी योजनाओं को कहीं भी क्षति पहुँचाने का प्रयास न करे। एक जगह यदि विरोध है तो दूसरी जगह प्रगति दिखाई देती हो और जमाअत का संगठन फैलता चला जाए। खुदा

तआला की कृपा से आज हम देख रहे हैं कि दुनिया के सभी देशों में अहमदियत और वास्तविक इस्लाम का संदेश पहुँचा हुआ है और हमारे प्रचारक मिशनरी वहाँ कार्य कर रहे हैं। दुनिया के विभिन्न देशों में हमने मस्जिदें बनाई हैं। हमारे स्कूल कार्य कर रहे हैं। अस्पताल कार्य कर रहे हैं। प्रचारक और शिक्षक सेवा-श्रृंखला की सुविधा पा रहे हैं। साहित्य का प्रकाशन हो रहा है। एमटीए स्टूडियो कई देशों में स्थापित हैं, केन्द्रीय स्टूडियो के अलावा जो दुनिया में फैला हुआ है। रेडियो स्टेशन स्थापित हैं। हालाँकि ये सभी कार्य हैं, इनका बहुत सा खर्च शेष चंदों से भी पूरा किया जाता है, परंतु तहरीक-ए-जदीद इसमें बड़ा महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।

तहरीक-ए-जदीद के अंतर्गत ही दुनिया में प्रचारक तैयार किए गए हैं और खुदा तआला की कृपा से दुनिया के लगभग छह-सात देशों में विश्वविद्यालय स्थापित हैं जहाँ प्रचारक और शिक्षक तैयार होते हैं और फिर दुनिया में फैलकर इस्लाम और अहमदियत के प्रचार का कार्य कर रहे हैं। और यह जो अहरार का दावा था कि हम क़ादियान की ईंट से ईंट बजा देंगे, अहमदियत को विश्व पृष्ठ से मिटा देंगे और आज तक ये नारे हमारे विरोधी लगाते हैं।

पिछले दिनों में रबवाह में एक सम्मेलन हुआ था, उनकी सभा हुई थी, उसमें भी उन्होंने यही नारा लगाया। तो इन नारों का उत्तर हर साल जमाअत की प्रगति से दिया जाता है। खुदा तआला की कृपाओं से दिया जाता है। जमाअत में प्रतिज्ञा करके सम्मिलित होने वाले लोग ही इसका उत्तर हैं। और आज दो सौ बीस (220) देशों में फैला हुआ जमाअत की प्रगति इसका उत्तर है कि देखो! तुम यह नारा लगाते थे कि विश्व पृष्ठ से मिटा देंगे परंतु खुदा तआला के ये अनुग्रह हैं कि जमाअत प्रगति पर प्रगति करती चली जा रही है।

अतः खुदा तआला का यह कार्य और यह पुष्टि इस बात का प्रमाण है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा सच्चा था और सच्चा है और अहमदियत खुदा तआला की कृपा से किसी मनुष्य का स्थापित किया हुआ पौधा नहीं, किसी संगठन का स्थापित किया हुआ पौधा नहीं, किसी सरकार का स्थापित किया हुआ पौधा नहीं, बल्कि खुदा तआला का स्थापित किया हुआ पौधा है जो एक विशाल वृक्ष बन चुका है, जिसकी शाखाएँ सारी दुनिया में फैली हुई हैं और खुदा तआला उसे और अधिक फैलाता और फल लगाता चला जा रहा है। यह श्रृंखला चल रही है और बढ़ती चली जा रही है।

यह आयत जो मैंने पढ़ी है, उसमें भी खुदा तआला फ़रमाता है कि जो खुदा तआला के मार्ग में धन खर्च करते हैं, उनकी उदाहरण उस दाने की तरह है, जैसा कि अनुवाद में बताया गया था, जिसकी दस बालें हों और प्रत्येक बाल में सौ (100) दाना हो, बल्कि खुदा तआला उससे भी अधिक बढ़ा देता है। खुदा तआला ने वायदा फ़रमाया है कि मैं तुम्हें जो तुम मेरे मार्ग में खर्च करते हो, बिना प्रतिफल के नहीं छोड़ता, बल्कि यह शक्ति रखता हूँ कि तुम्हारे इस बलिदान को सात सौ गुना तक बल्कि उससे भी अधिक कर दूँ। अतः यह आदेश देकर खुदा तआला ने विश्वासियों के हृदयों में यह प्रेरणा पैदा की कि अपने हृदय खोलते चले जाओ और खुदा तआला के मार्ग में खर्च करते चले जाओ। खुदा तआला के धर्म के प्रसार के लिए खर्च करो जो कार्य इस युग में मसीह मौऊद और मसीह प्रतीक्षित के जिम्मे था और फिर आज आप अलैहिस्सलाम के जमाअत के जिम्मे है। तो

फिर खुदा तआला हमारे धनों में बरकत डालेगा और हम हर वर्ष देखते हैं और मैं वर्णन भी करता रहता हूँ। इस वर्ष भी बहुत सारे उदाहरण हैं कि खुदा तआला किस प्रकार लोगों के हृदय खोलता है और बहुत सारी जगहों पर किसी भी प्रकार की कमी की चिंता से बिल्कुल निश्चित होकर लोग बलिदान करते चले जा रहे हैं। और फिर खुदा तआला उनको देता भी है या उनके हृदय को शांति प्रदान करता है और वे इस बलिदान पर प्रसन्न होते हैं। यदि तुरंत उनको परिणाम नहीं भी मिलता तो फिर कुछ समय बाद उनकी वे इच्छाएँ भी पूरी हो जाती हैं जिनको त्याग कर उन्होंने धन का बलिदान किया था। खुदा तआला फ़रमाता है कि इस संसार में भी प्रतिफल होगा, अगले संसार में भी प्रतिफल होगा। बहुत से ऐसे हैं जो इस संसार में भी प्रतिफल पाते हैं और अगले संसार का प्रतिफल तो असीम है। पुराने बुजुर्गों ने भी इस आयत की यही व्याख्या फ़रमाई है। उदाहरण के लिए इमाम रज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी व्याख्या में लिखा है कि खुदा तआला ने धन को बढ़ा-चढ़ाकर वापस करने का वायदा फ़रमाया है। वे लिखते हैं कि खुदा तआला ने जीवित करने और मारने की अपनी शक्ति पर तर्क दिए हैं। यदि यह खुदा तआला की शक्ति न होती तो खर्च करने का आदेश स्थिर न होता, क्योंकि यदि प्रतिफल और दंड देने वाला कोई अस्तित्व न होता तो खर्च करना व्यर्थ ठहरता। यदि प्रतिफल और दंड नहीं है तो खुदा तआला यह न कहता कि मेरे मार्ग में खर्च करो, मैं तुम्हें दूँगा। इसका अर्थ यही है कि खुदा तआला ही अपने मार्ग में बलिदान करने वालों को प्रतिफल देता है और पाप करने वालों को उसके मुकाबले में दंड भी मिलता है। इस संदर्भ में आपने यही लिखा है कि दूसरे शब्दों में मानो खुदा तआला खर्च करने वालों को यह कहता है कि तू जानता है कि मैंने तुझे पैदा किया है और तुझ पर अपनी कृपा को पूरा किया है और तू मेरे प्रतिफल और पुण्य देने की शक्ति से परिचित है। अतः चाहिए कि तेरा यह ज्ञान तुझे धन खर्च करने के लिए प्रोत्साहित करे क्योंकि वही अर्थात् खुदा तआला थोड़े का बहुत अधिक बदला देता है और यही बहुत अधिक की उदाहरण बताई है कि जो एक दाना बोता है, मैं उसके लिए सात बालें निकालता हूँ और प्रत्येक बाल में सौ दाने होते हैं। फिर इसको वर्णन करते हुए यह लिखते हैं कि "वे खुदा तआला के मार्ग में अपना धन खर्च करते हैं।" "खुदा तआला के मार्ग" से अभिप्राय धर्म है।

(अत्तफ़सीरुल कबीर लिल इमाम फ़ख़रुद्दीन अर-रज़ी, जिल्द 4, पृष्ठ 39, मकतबा दारुल कुतुबिल इल्मिया, बेरूत)

खुदा तआला के धर्म में खर्च करते हैं। इस प्रकार हम तो जमाअत अहमदिया में हर समय यह दृश्य देखते हैं कि खुदा तआला किस प्रकार अपने वादे को और अपने इस आदेश को पूरा फ़रमाता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस आयत की व्याख्या फ़रमाई है कि "यदि तुम धार्मिक कार्यों के लिए अपने धन खर्च करोगे तो जिस प्रकार एक दाने से खुदा तआला सात सौ दाने पैदा कर देता है, उसी प्रकार वह तुम्हारे धनों को भी बढ़ाएगा, बल्कि उससे भी अधिक उन्नति प्रदान करेगा जिसकी ओर 'और खुदा तआला जिसके लिए चाहता है, उसे और अधिक बढ़ा देता है' में संकेत है। इस प्रकार इतिहास गवाह है कि ऐसा ही हुआ। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने निश्चित रूप से बड़े बलिदान किए थे, परंतु खुदा तआला ने उन्हें अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पहला ख़लीफ़ा बनाकर उन्हें जिस महान पुरस्कार से नवाजा, उसके मुकाबले में उनके बलिदान भला क्या महत्व रखते थे? इसी प्रकार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बहुत कुछ दिया, परंतु उन्होंने कितना बड़ा पुरस्कार पाया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी जो कुछ खर्च किया, उससे लाखों गुना अधिक उन्होंने इसी दुनिया में पा लिया। इसी प्रकार हम व्यक्तिगत रूप से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का हाल देखते हैं तो वहाँ भी खुदा तआला का यही व्यवहार दिखाई देता है। हज़रत अब्दुरहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो को ही देख लो। लिखते हैं कि जब वे स्वर्गवासी हुए तो उनके पास तीन करोड़ रुपया जमा था। इसके अलावा अपने जीवन में वे लाखों रुपया दान करते रहे। इसी प्रकार सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी मातृभूमि को छोड़ा तो उनको बेहतर मातृभूमि मिली। बहन-भाई छोड़े तो उनको बेहतर बहन-भाई मिले। अपने माता-पिता को छोड़ा तो माता-पिता से बेहतर प्रेम करने वाले रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मिल गए। संक्षेप में, खुदा तआला के मार्ग में बलिदान करने वाला कभी भी अच्छे प्रतिफल से वंचित नहीं

रहा।"

(तफ़्सीर कबीर, जिल्द 2, पृष्ठ 604, संस्करण 2004)

पिछले उपदेशों में मैं बदरी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के बारे में वर्णन करता रहा हूँ और आजकल जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन-चरित्र युद्धों के संदर्भ में वर्णन हो रहा है, उसमें भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की अच्छाइयों का उल्लेख आ जाता है। बलिदानों का उल्लेख आ जाता है। अब देखें! उनको किस प्रकार खुदा तआला नवाजता चला जा रहा था और हम इतिहास से यह देखते हैं कि खुदा तआला ने उन्हें नष्ट होने के लिए नहीं छोड़ा, बल्कि उन्हें अनगिनत नवाजा। अतः खुदा तआला ने असंख्य स्थानों पर खर्च करने के बारे में फ़रमाया है। खुदा तआला कहीं कहता है कि अपने धन में से खर्च करो। जो तुम्हारी पसंदीदा चीज़ है, उसमें से खर्च करो, मैं तुम्हें प्रतिफल दूँगा। तुम्हारे धनों में तुम्हें विस्तार देता चला जाऊँगा। मैं अपनी कृपाओं से तुम्हें नवाजता चला जाऊँगा और यह खुदा तआला की कृपाएँ हम देखते रहते हैं।

आज भी प्रत्येक अहमदी जो वास्तविक रूप से हृदय से बलिदान करने वाला है, यह अनुभव करता है। जो बलिदान करने वाले हैं, वे मुझे अपने घटनाक्रम भी लिखते हैं। आश्चर्य होता है कि किस प्रकार खुदा तआला ने उन्हें बलिदान करने की सुविधा दी और किस प्रकार उनके विश्वासों को दृढ़ किया।

मैं कुछ उदाहरण भी प्रस्तुत करूँगा, लेकिन इससे पहले कुछ ज्ञानपूर्ण और ऐतिहासिक संदर्भ भी वर्णन करूँगा और हदीसों से भी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक बात की व्याख्या फ़रमाई है जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "अपने लिए आकाश पर धन इकट्ठा करो जहाँ न कीड़ा खराब करता है, न जंग और न वहाँ चोर संध लगाते और चुराते हैं..." यह तो मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा है न, इंजील में। "लेकिन पवित्र कुरआन कहता है कि यदि तुम खुदा तआला के खजाने में अपना धन इकट्ठा करोगे तो यही नहीं कि उसे कोई चुराएगा नहीं, बल्कि तुम्हें कम से कम एक के बदले में सात सौ (700) पुरस्कार मिलेंगे और इससे अधिक की कोई सीमा नहीं। फिर मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं कि वहाँ अनाज को कोई कीड़ा नहीं खा सकता, परंतु पवित्र कुरआन कहता है कि वह केवल कीड़े से ही सुरक्षित नहीं रहता, बल्कि एक से सात सौ गुना होकर वापस मिलता है। निश्चित ही खुदा तआला किसी मनुष्य की सहायता का मोहताज नहीं, परंतु वह अपने बंदों पर दया करते हुए यदि किसी कार्य के करने का उन्हें अवसर देता है तो इसलिए कि वह उनके स्तरों को ऊँचा करना चाहता है।"

(तफ़्सीर कबीर, जिल्द 2, पृष्ठ 604-605, संस्करण 2004)

और इस दुनिया में भी व्यावहारिक रूप से उसे सात सौ गुना बढ़ा सकता है, लेकिन इन अच्छाइयों का प्रतिफल अगले संसार में कई गुना बढ़ाकर भी देगा। अतः खुदा तआला का यह वायदा कि वह सात सौ गुना बढ़ाता है, केवल इस दुनिया के लिए नहीं, बल्कि इस दुनिया में भी और अगले संसार में भी बढ़ाता चला जाता है। इसकी व्याख्या हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी एक जगह फ़रमाई है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अच्छी तरह याद रखो कि पैगंबर जो चंदा माँगते हैं तो अपने लिए नहीं, बल्कि उन्हें चंदा देने वालों को कुछ दिलाने के लिए। अर्थात् चंदा देने वाले जो बलिदान करने वाले हैं, उनके लाभ के लिए कहते हैं कि चंदा दो ताकि खुदा तआला तुम पर कृपा करे और तुम्हारे धनों को बढ़ाए।

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि खुदा तआला के समक्ष पहुँचाने के बहुत से मार्ग हैं, उनमें से यह भी एक मार्ग है जिसका उल्लेख आरंभिक सूरह में अर्थात् सूरह बक्ररह में "जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसमें से खर्च करते हैं" की आयत चार से किया है। फिर "धन को उसकी प्रियता पर भी देते हैं।" यह भी सूरह बक्ररह की आयत 178 है। फिर इसी पारे में "खर्च करो उसमें से जो हमने तुम्हें दिया है" में उल्लेख किया है। यह भी सूरह बक्ररह की आयत 255 है। फिर फ़रमाया: अब खोलकर मुद्दा-ए-खर्च-खुदा तआला-के-मार्ग-में वर्णन किया जाता है कि इंजील में एक वाक्य है कि जो कोई माँगे तू उसे दे। परंतु देखो पवित्र कुरआन ने इस विषय को पाँच अनुभागों में समाप्त किया है। बहुत विस्तार से वर्णन किया है। पहला प्रश्न तो यह है कि किसी को क्यों दे? तो इसका वर्णन फ़रमाया है कि खुदा तआला के कलमे (वाणी) को

ऊँचा करने के लिए दो। इस खर्च करने वाले की एक उदाहरण तो यह है कि जैसे कोई बीज धरती में डालता है, उदाहरण के लिए बाजरे का, फिर उसमें कई बालें निकलने लगती हैं। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं "और खुदा तआला जिसके लिए चाहता है, उसे और अधिक बढ़ा देता है।" अर्थात् कुछ स्थानों पर एक के बदले दस और कुछ में एक के बदले सात सौ का उल्लेख है। यह आवश्यकता, अनुमान, समय और अवसर के आधार पर अंतर है, उदाहरण के लिए एक व्यक्ति नदी के किनारे पर है, सर्दी का मौसम है, वर्षा हो रही है। ऐसी स्थिति में कोई उससे पानी माँगता है तो किसी को गिलास भरकर पानी दे दे। पानी ही पानी है, हर जगह तो यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन यदि एक व्यक्ति किसी को पानी दे जबकि वह जंगल में दोपहर के समय प्यास के कारण तड़प रहा हो, प्राण संकट में हो, बुखार में, जलन में पीड़ित हो, पानी दे दे तो वह बहुत बड़ी अच्छाई है। अतः इस प्रकार के अंतर के आधार पर खुदा तआला ने प्रतिफलों में अंतर रखा है। कहीं बलिदान आवश्यकता के अनुसार बहुत अधिक होता है और उसकी आवश्यकता भी अधिक होती है, इसलिए उसका प्रतिफल भी खुदा तआला सात सौ गुना या उससे भी अधिक बढ़ा देता है, जबकि कहीं बलिदान इतना अधिक नहीं होता, परंतु किसी भी स्थिति में बलिदान की आवश्यकता होती है, वहाँ खुदा तआला यह नहीं कहता कि प्रतिफल से खाली रखे, बल्कि वहाँ भी दो गुना या दस गुना प्रतिफल देता है।

यह उदाहरणें हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने धन खर्च करने के बारे में दी हैं। इस संदर्भ में भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक और उदाहरण हज़रत राबिया बसरी का घटनाक्रम बताया है कि वह घर बैठी थीं तो अतिथि आ गए और घर में भोजन के लिए केवल दो रोटियाँ थीं। उन्होंने नौकरानी से कहा कि ये दो रोटियाँ दान में दे आओ। नौकरानी ने कहा: यह अजीब बात है कि घर में अतिथि आए हुए हैं और यह जो थोड़ी-बहुत रोटी है, आप कहती हैं कि यह भी गरीबों में बाँट आओ। थोड़ी देर बाद बाहर से आवाज आई और एक स्त्री ने कहा कि किसी धनी स्त्री ने जो पड़ोस में रहती थी, उसने कुछ भोजन भेजा है। जब भोजन आया तो हज़रत राबिया बसरी ने गिना तो उसमें अठारह रोटियाँ थीं। हज़रत राबिया बसरी का खुदा तआला से गहरा संबंध और खुदा तआला पर विश्वास था कि वह उनकी बात को अवश्य पूरा करेगा। उन्होंने दो दी हैं तो उससे अधिक होनी चाहिए। उसके मुकाबले में दो गुना तो हों या दस गुना तो हों। उन्होंने कहा: ये अठारह रोटियाँ मेरे लिए नहीं हैं, मेरे बीस अतिथि आए हैं और मेरे लिए तो खुदा तआला की ओर से बीस रोटियाँ आनी चाहिए थीं। ये मेरे लिए नहीं हैं। उन्होंने कहा: ये मैं नहीं लूँगी, ये वापस कर दो। आपकी नौकरानी ने कहा: रख लें, खुदा तआला ने वरदान भेजा है, लेकिन उन्होंने कहा: नहीं! यह मेरे लिए नहीं भेजा। इतने में पड़ोस की वही धनी स्त्री जो थी, उसकी उस स्त्री को या नौकरानी को आवाज आई, उसने कहा: तुम कहाँ चली गई हो? मैंने तो राबिया बसरी के लिए यह दूसरा भोजन का सामान तैयार किया हुआ था। और जब वह आया तो उसमें बीस रोटियाँ थीं। तो इस प्रकार ये बुजुर्ग लोग खुदा तआला पर विश्वास भी रखते थे और खुदा तआला उनका मान भी पूरा करता था।

इस संदर्भ में हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह बात वर्णन फ़रमाई है कि खुदा तआला के मार्ग में क्यों दे? फ़रमाया कि सबसे पहले तो यह कि केवल खुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए दो, अर्थात् उपकार न जताओ, बल्कि खुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए दो ताकि खुदा तआला प्रसन्न हो। उसने हम पर असंख्य उपकार किए हैं, उसके लिए दो।

### CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY

थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान

सभी प्रकार के शारीरिक टेस्ट (खून, मल, बलगम इत्यादि) कंप्यूटराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।

हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.



चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा  
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा  
फ़ोन नंबर :- +91-9646561639, +91-8557901648

और फिर उसके लिए इसलिए दो कि खुदा तआला के धर्म के लिए देना आवश्यक है। किस प्रकार दो? खुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए दो, जैसा कि उल्लेख हुआ, न उपकार जताने के लिए।

(स्रोत: हक्राइकुल फुरक़ान, जिल्द 1, पृष्ठ 420-421)

जमाअत पर किसी का, जिसने बलिदान किया है, कोई उपकार नहीं है, बल्कि खुदा तआला का उपकार है कि जब तुम उसके मार्ग में अच्छी नीयत से खर्च करते हो तो वह तुम्हें बढ़ा-चढ़ाकर देता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "खुदा तआला के मार्ग में जो लोग धन खर्च करते हैं, उनके धनों में खुदा तआला इस प्रकार बरकत देता है कि जैसे एक दाना जब बोया जाता है तो हालाँकि वह एक ही होता है, परंतु खुदा तआला उसमें से सात बालें निकाल सकता है और प्रत्येक बाल में सौ दाने पैदा कर सकता है, अर्थात् मूल चीज़ से अधिक कर देना।" यह मौलिक बात है कि मूल चीज़ से अधिक कर देना, "यह खुदा तआला की शक्ति के अंतर्गत है और वास्तव में हम सभी लोग खुदा तआला की उसी शक्ति से ही जीवित हैं और यदि खुदा तआला अपनी ओर से किसी चीज़ को अधिक करने पर सक्षम न होता तो सारी दुनिया नष्ट हो जाती और एक जीवधारी भी धरती पर शेष न रहता।"

(चश्मा-ए-मारिफ़त, रूहानी खज़ायन, जिल्द 23, पृष्ठ 170-171)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा है कि सपनों की व्याख्या में धन यकृत (कलेजा) होता है। और यदि सपने में कोई धन देखे तो उसका अर्थ होता है यकृत। या देखे कि यकृत निकाल दिया है तो उसका अर्थ है धन निकाल दिया है। इसलिए दान करना प्राण देना होता है। अर्थात् धन के बलिदान की बहुत महत्ता है। मनुष्य दान करते समय कितनी सच्चाई और दृढ़ता दिखाता है और वास्तविक बात तो यह है कि केवल बातें करने से कुछ नहीं बनता, वार्तालाप से कुछ नहीं बनता, जब तक व्यावहारिक रूप में लाकर किसी बात को न दिखाया जाए। दान उसको इसीलिए कहते हैं कि वह सच्चों पर निशान लगा देता है ताकि उसकी सच्चाई सिद्ध हो जाए कि विश्वास में वास्तविक सच्चाई है। (स्रोत: मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 238, संस्करण 1984)

हदीस में आता है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: क्या मैं तुम्हें सबसे अधिक उदार के बारे में न बताऊँ? लोगों ने निवेदन किया: क्यों नहीं, हे खुदा तआला के रसूल! तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: खुदा तआला सभी उदारता करने वालों से बहुत अधिक उदारता करने वाला है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने बारे में बताया कि मैं सभी मनुष्यों में से सबसे अधिक बड़ा उदार हूँ।

(मजमउज़ ज़वाइद, जिल्द 1, पृष्ठ 224, किताबुल इल्म, बाब फ़ी मन नशर इल्मन... हदीस नंबर 760)

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़, रोज़ा और धन के बलिदान की ओर भी ध्यान दिलाया। एक रिवायत में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: नमाज़, रोज़ा और स्मरण करना खुदा तआला के मार्ग में खर्च किए गए धन को सात सौ गुना बढ़ा देता है।

(सुनन अबी दाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी तज़ईफ़िज़ ज़िक्र फ़ी सबीलिल्लाह, 2498)

अतः यह मार्गदर्शन है उन लोगों के लिए जिन्होंने धन के बलिदान दिए हैं कि वे अपनी इबादतों के स्तर को भी बढ़ाएँ और ऊँचा करें। केवल धन का बलिदान करके यह न समझ लें कि बहुत हो गया। धन का बलिदान करके यह न समझ लेना चाहिए कि हम इबादतों से मुक्त हो गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नमाज़, रोज़ा भी धन के बलिदानों के साथ आवश्यक है, जैसा कि मैंने हदीस से बताया और यही चीज़ें हैं जो फिर तुम्हें खुदा तआला का निकट लाती हैं और फिर खुदा तआला तुम पर दयालु होकर तुम्हारे धनों को बढ़ाता चला जाता है।

बहुत से लोग बलिदान करते हैं। आजकल भी हमारे पास बहुत सारे ऐसे उदाहरण आते हैं कि जब आवश्यकता होती है तो उसके बावजूद वे खुदा तआला के मार्ग में खर्च कर देते हैं और इस आशा पर करते हैं कि खुदा तआला के मार्ग में खर्च करना खुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने का कारण बनेगा और यह हमारा बलिदान जो है, व्यर्थ नहीं होगा, खुदा तआला उसे व्यर्थ नहीं करेगा और

फिर खुदा तआला वास्तव में उसे व्यर्थ नहीं करता।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में फ़रमाया। रिवायत आती है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास एक व्यक्ति आया और उसने कहा: हे खुदा तआला के रसूल! प्रतिफल के दृष्टिकोण से सबसे बड़ा दान क्या है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: सबसे बड़ा दान यह है कि तू उस स्थिति में दान करे कि तू स्वस्थ हो, धन की आवश्यकता हो, लालच रखता हो, उसकी गरीबी से डरता हो और समृद्धि चाहता हो। उस समय दान और भलाई में देर न कर। ये सारी जो सांसारिक चीज़ें हैं, जो अपनी इच्छाएँ हैं, उनकी इच्छाएँ हों, लेकिन उसके बावजूद तुम दान करो, भलाई करो, खुदा तआला के मार्ग में खर्च करो। फ़रमाया कि कहीं ऐसा न हो कि तेरा प्राण गले में आ पहुँचे, जब तू मरने के निकट हो तो कहे कि अमुक को इतना दे दो और अमुक को इतना दे दो। फ़रमाया कि वह धन तो अब तेरा रहा ही नहीं, वह तो अमुक का हो ही चुका है, वह तो अब वारिसों को मिलना ही मिलना है।

(सहीहुल बुख़ारी, किताबुल वसाया, बाबुस सदक़ति इंदल मौत, हदीस 2748)

इसलिए फ़रमाया कि स्वास्थ्य की स्थिति में और आवश्यकता की स्थिति में खुदा तआला के मार्ग में खर्च करना ही वास्तविक बलिदान है। यदि यह करोगे तो फिर खुदा तआला तुम्हें इस दुनिया में भी बढ़ाकर देगा और अगले संसार में भी बढ़ाकर देगा।

हमारे जमाअत में भी बुजुर्गों के उदाहरण यही होते थे कि वे अपने धन को खुदा तआला के मार्ग में खर्च करने के लिए गिनते नहीं थे, बल्कि बिना संकोच खर्च किया करते थे। इसी प्रकार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के उदाहरण हमें मिलते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रिवायत में आता है कि एक बार अपनी संबंधी बहन हज़रत अस्मा बिनत अबी बक्र रादियल्लाहु तआला अन्हा को उपदेश फ़रमाया कि खुदा तआला के मार्ग में गिन-गिन कर खर्च न किया करो, वरना खुदा तआला भी तुम्हें गिन-गिन कर ही देगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अपने रूपों की थैली का मुँह कंजूसी के कारण बंद न करना। अर्थात् जहाँ धन रखा है, उसका मुँह बंद न करना, कंजूसी से दबाकर न बैठ जाना वरना फिर उसका मुँह बंद ही रहेगा, फिर कभी उसमें धन नहीं आएगा। अतः यही फ़रमाया कि यदि धन निकलेगा, यदि खुदा तआला के मार्ग में निकालोगे तो और आएगा भी। इसलिए हृदय को खोलकर खर्च करो।

जमाअत में हम उदाहरण देखते हैं तो सबसे पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग में हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत बलिदान किया करते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग में आप अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा करने और आप अलैहिस्सलाम की सहायता करने के लिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु अनगिनत खर्च करते थे। इस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्वयं ही एक जगह इसका उल्लेख फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं अनुमति देता तो वे सब कुछ दे देते, अर्थात् हज़रत मौलाना नूरुद्दीन खलीफ़तुल मसीह अल-अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु सब कुछ इस मार्ग में न्योछावर करके अपनी आत्मिक साथ की तरह शारीरिक साथ और हर क्षण संगति में रहने का अधिकार अदा करते। मैंने तो अनुमति नहीं दी, वरना सब कुछ उन्होंने दे देना था। आप अलैहिस्सलाम ने लिखा है: उनके कुछ पत्नों की कुछ पंक्तियाँ नमूने के रूप में प्रकट करके दिखला देता हूँ। हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-अव्वल हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में लिखा कि मैं आपके मार्ग में बलिदान हूँ। मेरा जो कुछ है, मेरा नहीं, आपका है। हे पीर-ओ-मुरशिद! मैं पूर्ण सच्चाई से निवेदन करता हूँ कि मेरा सारा धन-संपत्ति यदि धार्मिक प्रसार में खर्च हो जाए तो मैं इच्छा को पहुँच गया हूँ।

(स्रोत: फ़तह-ए-इस्लाम, रूहानी खज़ायन, जिल्द 3, पृष्ठ 35-36)

तो देखें! जिस प्रकार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को खुदा तआला ने अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और धन का बलिदान करने वाले दिए थे, उसी प्रकार इस युग में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी

अपने स्वामी की अनुसरण करने के कारण ऐसे सेवक प्रदान किए जो हर चीज़ बलिदान करने के लिए तैयार थे और अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का उदाहरण बनकर उन्होंने दिखाया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "ये वादे भी खुदा तआला की ओर से ही हैं कि जो व्यक्ति खुदा तआला के लिए देगा, मैं उसे कई गुना बरकत दूंगा। दुनिया में ही उसे बहुत कुछ मिलेगा और मरने के बाद परलोक का प्रतिफल भी देख लेगा कि कितना आराम प्राप्त होता है।" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "संक्षेप में इस समय मैं इस बात की ओर तुम सभी का ध्यान दिलाता हूँ कि इस्लाम की उन्नति के लिए अपने धनों को खर्च करो।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 8, पृष्ठ 394, संस्करण 1984)

बरकत इस दुनिया में भी मिलता है और अगले संसार में भी। और यह केवल कहने की बात नहीं है, बल्कि आज भी हम देखते हैं। यह उस युग की बात नहीं जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमा रहे हैं, आज भी मेरे पास बहुत से ऐसे घटनाक्रम आते हैं जो प्रकट करते हैं कि खुदा तआला के मार्ग में खर्च करने के बाद किस प्रकार खुदा तआला हमारे धनों में बरकत प्रदान करता है, हमारी जीवन की समस्याओं को दूर करता है और हमारे विश्वासों को दृढ़ करता है।

कुछ एक घटनाओं का भी उल्लेख कर देता हूँ।

अल्बानिया से प्रचारक साहिब लिखते हैं कि एक अल्बानियाई मित्र बिलाल यूसुफ साहिब हैं, बहुत साधारण स्वभाव के व्यक्ति हैं, गरीब भी हैं। वहाँ सभा हो रही थी तो उन्होंने खुदा तआला की प्रसन्नता के लिए बिना किसी मुआवज़े के एक सप्ताह तक प्रतिदिन सुबह आठ बजे से शाम चार बजे तक सभा का कार्य किया। और हमारे बहुत सारे स्वयंसेवक सभाओं पर दुनिया में यह कार्य करते हैं, लेकिन कुछ को आवश्यकता होती है तो उसके बावजूद स्वयंसेवक समय देते हैं, स्वेच्छा से। कुछ को आवश्यकता होती भी नहीं, उनका गुज़ारा चल रहा होता है। किसी भी स्थिति में, कहते हैं ये शाम को कार्य करते थे चार बजे तक और फिर चार बजे शाम को अपनी नौकरी पर चले जाते थे। एक दिन लिफाफे में पचहत्तर (75) यूरो तहरीक-ए-जदीद का चंदा लेकर आए। अल्बानिया पूर्वी यूरोप का गरीब देश है। शिक्षक साहिब को कहने लगे कि कई दिनों से यह राशि चंदे में देने के लिए जमा की थी और लिफाफे के ऊपर अल्बानियाई भाषा में यह लिखा हुआ था कि बहुत खुशी से जमाअत की सेवा में प्रस्तुत है। शायद यह राशि दूसरों को कम लगती हो, पचहत्तर (75) यूरो मात्र, लेकिन शिक्षक साहिब लिखते हैं कि यह उनकी पंद्रह प्रतिशत तनख्वाह थी, जबकि उन्हें घर का किराया वगैरह भी देना था।

सांसारिक लोग तो कह सकते हैं कि पचहत्तर (75) यूरो से ये इस्लाम को फैलाने की बातें करते हैं या कुछ यूरो से इस्लाम को फैलाने की बातें करते हैं, जबकि इस्लाम-विरोधी जो संगठन हैं और सरकारें हैं, उनके पास अरबों, अरबों पाउंड हैं, वे अपने पैसे इस्लाम के विरुद्ध खर्च कर रहे हैं, लेकिन खुदा तआला ने उनकी इस छोटी सी बलिदान में भी इतनी कृपा की है कि इस बलिदान से जमाअत अहमदिया मिशन भी स्थापित कर रही है। केवल यह एक नहीं है पचहत्तर (75) यूरो देने वाले, बहुत सारे ऐसे लोग हैं, बल्कि उससे भी कम देने वाले लोग हैं और जमाअत खुदा तआला की कृपा से उन्हीं छोटी-छोटी राशियों से दुनिया में अपना कार्य संपन्न कर रही है, इस्लाम के प्रसार का कार्य कर रही है और दुनिया में जो प्रगति हो रही है वह अरबों डॉलर खर्च करने वालों से कहीं अधिक है।

इसी प्रकार उससे भी अधिक गरीब देशों में कुछ बलिदान के दृश्य दिखाई देते हैं जो इस्लाम के आरंभ या उस समय जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने धन के बलिदानों की प्रेरणा फ़रमाई थी, उस समय प्रस्तुत आते थे या उस समय आए जब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तहरीक-ए-जदीद की घोषणा फ़रमाई कि आज शत्रु पूरी तरह तैयार होकर हम पर आक्रमण कर रहा है, इसलिए खर्च करो। और इस पर लोगों ने बलिदान किए। गरीब स्त्रियों ने अपनी मुर्गियाँ और मुर्गियों के अंडे बेचकर चंदे दे दिए। सामान्य-सामान्य बलिदान था। उस समय दो-तीन वर्ष में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह कहा था कि तीन वर्ष में भारत में सत्ताईस हज़ार रुपया जमा करो, लेकिन

जमाअत ने बलिदान किया और एक वर्ष में ही एक लाख रुपया जमा कर लिया। आज भी बलिदानों के दृश्य हमें गरीब देशों की ओर से दिखाई देते हैं।

(स्रोत: अल-हकम, जिल्द 25, नंबर 8, दिनांक 21 फरवरी 1923 ई., पृष्ठ 7; स्रोत: तारीख-ए-अहमदियत, जिल्द 7, पृष्ठ 35)

इण्डोनेशिया में एक सदस्य जादी मुज़प्फर साहिब हैं। कहते हैं कि उनकी पत्नी के पास जमाअत की एक वृद्ध महिला आई, उन्होंने कुछ गट्टर लकड़ियाँ उस नीयत से प्रस्तुत कीं कि हम उन्हें खरीद लें। कहते हैं कि हमें तो लकड़ियों की आवश्यकता नहीं थी, पहले ही हमने खरीदकर रखी हुई थीं। छोटे कस्बों में या गाँव में रहते थे, उन गरीब देशों में जो पूरी तरह विकसित नहीं हैं तो कभी-कभी गरीब लोग लकड़ियाँ जलाते हैं। गैस तो वहाँ होती नहीं या शायद मिट्टी के तेल के चूल्हे जला लेते हों, लेकिन किसी भी स्थिति में लकड़ियाँ फिर भी प्रयोग होती हैं। तो कहते हैं हम क्योंकि अन्य चीजें भी प्रयोग कर रहे थे, इसलिए हमने कहा: लकड़ियाँ हमारे पास अधिक प्रयोग नहीं होतीं, हमें आवश्यकता नहीं है। लेकिन किसी भी स्थिति में चूँकि वह बेचारी वृद्ध महिला सिर पर गट्टर उठाकर लाई थी तो पत्नी ने उस पर दया खाते हुए लकड़ियाँ खरीद लीं। इण्डोनेशियाई रुपए की कीमत बहुत कम है, वहाँ लाखों में बातें होती हैं, तो उन्होंने लकड़ियों का वह गट्टर एक लाख रुपये में जो पाकिस्तानी रुपए के बराबर भी कुछ रुपए बनते हैं, उसमें खरीद लिया। किसी भी स्थिति में, जब खरीद लिया और उसे धन देना चाही तो उस वृद्ध महिला ने कहा कि मैं ये लकड़ियाँ इसलिए नहीं लाई कि तुमसे धन लूँ और अपने पर खर्च करूँ, बल्कि यह तो मैंने तहरीक-ए-जदीद का चंदा देना था, इसे मेरी ओर से तहरीक-ए-जदीद के चंदे में गिन लो। उनकी पत्नी महिला समिति की अधिकारी भी थीं, वह धन जो थी, जो कुछ था, सारा वहीं चंदा दे गईं और एक पैसा भी अपने साथ लेकर नहीं गईं।

इसी प्रकार इण्डोनेशिया से ही एक सदस्य ससीलाह साहिबा बयान करती हैं कि कुछ वर्ष पहले उनकी आर्थिक स्थितियाँ अत्यंत खराब थीं। एक सात वर्ष का बच्चा था और दूसरे बच्चे से गर्भवती थीं। जिस दिन दूसरा बच्चा पैदा हुआ, उसी दौरान ईद भी निकट आ गई तो उन तीनों ने तहरीक-ए-जदीद के वादे की राशि जो कि बारह लाख रुपये थी, बाकी थी। जैसा कि मैंने बताया कि वहाँ रुपए की कीमत बहुत कम है तो यहाँ भी वही जज़्बा दिखाई देता है जिसकी उदाहरणें हम पहले बुजुर्गों में देखते हैं। वह कहती हैं कि बारह लाख रुपये का उनका वायदा था, हम चाहते थे कि तहरीक-ए-जदीद का चंदा दे दें और खलीफ़तुल मसीह को प्रार्थना के लिए लिखें। हमने पूरा प्रयास किया कि किसी प्रकार यह चंदा अदा हो जाए, लेकिन गरीबी के कारण यह कठिन दिखाई दे रहा था। कहती हैं मेरा एक बहुत थोड़ा सा बैंक खाता था, जब मैंने वहाँ देखा तो साढ़े बारह लाख रुपये वहाँ उपस्थित थे। तो कहती हैं यदि हम यह सब कुछ दे देते तो हमारे पास देने को कुछ न होता, लेकिन किसी भी स्थिति में उन्होंने निर्णय किया कि बारह लाख रुपये तो पति-पत्नी और बड़े बच्चे की ओर से दे दें और शेष पचास हज़ार जो है, वह छोटे बच्चे की ओर से दे दें, तो वह हमने दे दिया और इस प्रकार राशि समाप्त हो गई, कुछ भी उनके पास नहीं था। कहती हैं लेकिन हमें दुख नहीं हुआ, बल्कि हृदय में प्रसन्नता अनुभव हुई कि हमने अपना वायदा पूरा कर दिया और अपने नवजात बच्चे को भी उसमें शामिल कर लिया। कहती हैं कि खुदा तआला ने भी कैसी कृपा की कि एक सप्ताह के बाद ही उन्हें एक करोड़ बीस लाख रुपये की आय हो गई और यह देखकर उन्हें विश्वास हो गया कि खुदा तआला ने जो दस गुना बढ़ाने का वायदा किया है, उसे इस प्रकार पूरा किया है। खुदा तआला ने तुरंत अपना वायदा पूरा कर दिया।

इसी प्रकार घाना के प्रचारक लिखते हैं कि खलीफ़तुल मसीह के उपदेशों में विश्वास-वर्धक घटनाक्रम जब लोगों को सुनाए गए तो एक अफ्रीकी घानाई सदस्य ने अपनी जेब में उपस्थित अंतिम राशि भी खुदा तआला के मार्ग में दे दी। लेकिन वह कहते हैं कि मस्जिद से बाहर निकलते ही उन्हें दो फोन कॉल प्राप्त हुईं जो उनकी जीवन की दिशा बदलने वाली थीं। अर्थात् दो संभावित ग्राहकों ने उनसे संपर्क किया और उन्हें ऐसी आकर्षक नौकरी या अवसरों की पेशकश की जिससे उन्हें उनकी दी हुई राशि से बीस गुना अधिक लाभ प्राप्त हुआ। यह असाधारण घटना इस सत्य की एक जबर्दस्त याद दिलानी है कि खुदा तआला

अपने मार्ग में बलिदान करने वालों को किस प्रकार तत्काल और अतुलनीय पुरस्कारों से नवाजता है। यह घटना भी उनके विश्वास में वृद्धि का कारण बनी।

इसी प्रकार कीनिया से शिक्षक की पत्नी लिखती हैं: उनके पहले बच्चे का जन्म निकट था, बहुत सी जटिलताएँ उत्पन्न हो गईं, जिसके कारण बहुत चिंतित थीं। डॉक्टर चिंता का इजहार कर रहे थे। कहती हैं मैंने अपनी स्थितियाँ, सारी बातें पति को भी बताईं कि मुझे उसने परेशान किया हुआ है। उन्होंने कहा कि खुदा तआला से प्रार्थना करो और खुदा तआला ही हमारा अंतिम सहारा है। और तुरंत हम जो बलिदान कर सकते हैं, वह यह है कि आजकल तहरीक-ए-जदीद का वर्ष समाप्त होने वाला है तो अपना बकाया चंदा जो तहरीक-ए-जदीद का है, उसमें अदा कर दो और खुदा तआला पर मामला छोड़ दो, खुदा तआला कृपा करेगा। अजीब विश्वास की स्थिति है उन लोगों की। कहती हैं मैंने ऐसा ही किया। कुछ दिन बाद उन्होंने सपने में देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तशरीफ लाए हैं। आपने काले रंग का कोट पहना हुआ है, सिर पर पगड़ी है और हाथ में छड़ी भी थी। आपने उस महिला को फ़रमाया कि तुम चिंता न करो, बच्चे का जन्म भली-भाँति होगा, परंतु तुम्हारी बगल से होगा। इस प्रकार उनके यहाँ बच्चे का जन्म हुआ, लेकिन ऑपरेशन द्वारा हुआ जो पेट के एक तरफ से किया गया और किसी प्रकार की कोई जटिलता उत्पन्न नहीं हुई। किसी भी स्थिति में, वह समझती हैं कि यह सब कुछ खुदा तआला की कृपा है जो उनकी बलिदान के कारण हुआ और खुदा तआला ने बरकत प्रदान किया, वरना कहती हैं कि प्रसव के दिनों में जब बच्चा पैदा होने वाला था, डॉक्टरों ने बहुत से खतरों का इजहार किया था।

इस प्रकार खुदा तआला दूर-दराज के क्षेत्रों के अहमदियों को भी इस तरह बताकर उनके विश्वास को दृढ़ करता है और साथ ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की पुष्टि भी कर देता है।

गिनी कनाकरी के प्रचारक प्रभारी साहिब ने लिखा है कि मैं खलीफ़तुल मसीह के उपदेशों में से विश्वास-वर्धक घटनाक्रम सुना रहा था और ध्यान दिलाया कि चंदों में बलिदान करना चाहिए, आगे बढ़ना चाहिए और इसी प्रकार सबको तहरीक-ए-जदीद का वर्ष समाप्त होने के कारण उनकी अदायगी की ओर भी ध्यान दिलाया कि बजट पूरा नहीं हो रहा, उसे पूरा करना है। इसी शाम एक व्यक्ति मिशन हाउस आया और बताया कि यह लिफाफा मुहम्मद अल-हसन कोबी साहिब ने भेजा है। जब लिफाफा खोला गया तो उसमें तीन सौ यूरो उपस्थित थे जो कि स्थानीय मुद्रा में लगभग तीस लाख फ़्रॉक बनते हैं, बल्कि उससे भी अधिक। इस पर उन्होंने कोबी साहिब को फोन करके पूछताछ की कि लिफाफा आपने भेजा है? और कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि उपदेश जुमआ में आपसे यह सुना था कि लक्ष्य पूरा नहीं हुआ तो जुमआ के बाद जब मैं अपने कार्यालय पहुँचा हूँ तो मेरी दराज में यही राशि पड़ी थी और साथ खर्चों की एक लंबी सूची भी उपस्थित थी जो इस राशि से अदा होने थे। मैंने खर्चों की सूची को कूड़ेदान में फेंक दिया और यह राशि आपको तहरीक-ए-जदीद के चंदे में शामिल करने के लिए भिजवा रहा हूँ। सज्जन अपना तहरीक-ए-जदीद का चंदा पहले भी अदा कर चुके थे और एक अच्छी राशि अदा कर चुके थे।

तो अफ्रीका में रहने वालों के भी अजीब और आश्चर्यजनक बलिदान के घटनाक्रम हैं। निश्चित रूप से ये बातें उनके हृदयों में विश्वास की स्थिति पैदा करती हैं और यह खुदा तआला ही पैदा करता है, वरना मनुष्य का तो यह कार्य नहीं है। उन्हें ये अनुभव होते हैं कि खुदा तआला इस तरह बढ़ाकर देता है, तभी तो वे फिर बलिदान कर रहे होते हैं।

घटनाक्रम तो बहुत सारे हैं जो सभी बयान करना कठिन है। कुछ तो मैंने जो चुने हैं, वह भी नहीं बयान कर सकता, किसी भी स्थिति में कुछ एक कर देता हूँ।

तहरीक-ए-जदीद भारत के निरीक्षक तेलंगाना के एक व्यक्ति के बारे में लिखते हैं जो कि हैदराबाद के एक जगह के हैं। उनका वायदा सात हज़ार रुपये का था, परंतु नौकरी समाप्त होने के कारण वह अदायगी नहीं कर सके। अगले वर्ष के लिए उन्होंने दस हज़ार का वायदा लिखवा दिया। उनसे कहा गया: बीते वर्ष का वायदा तो आपने पूरा नहीं किया, आगामी के लिए बढ़ाकर वायदा कर रहे हैं? तो सज्जन ने उत्तर दिया कि मुझे विश्वास है खुदा तआला ही इसका प्रबंध

करेगा, क्योंकि मैं खुदा तआला के लिए दे रहा हूँ। इस प्रकार कुछ दिनों में ही उन्हें पहले से बेहतर नौकरी मिल गई और उन्होंने बीते दो वर्षों का भी चंदा अदा किया और नए आर्थिक वर्ष में अपना वायदा भी सात हज़ार की जगह अब बीस हज़ार प्रस्तुत कर दिया और उसकी अदायगी भी कर दी। इस तरह खुदा तआला ने उनके अच्छे विश्वास को पुरस्कृत किया।

इसी प्रकार इण्डोनेशिया की एक और उदाहरण है। अजीब-अजीब घटनाक्रम होते हैं जो संयोग नहीं हैं, क्योंकि जिनके साथ होते हैं, वे सब उस पृष्ठभूमि को जानते हैं कि किन परिस्थितियों में बलिदान कर रहे हैं, किन परिस्थितियों में उन्हें बलिदान का विचार पैदा हुआ और फिर खुदा तआला की शक्ति किस प्रकार उन्होंने देखी।

किसी भी स्थिति में, वे (प्रचारक प्रभारी इण्डोनेशिया) लिखते हैं कि एक अत्यंत निष्ठावान अहमदी मित्र बहादुर जान, टैक्सी चलाते हैं, कुछ समय पहले एक टैक्सी कंपनी से अपनी टैक्सी का कार्य जारी रखने के लिए एक कार खरीदी। कहते हैं गाड़ी खरीदने के बाद यातायात पुलिस के कार्यालय गाड़ी का पंजीकरण करवाने गया तो उन्होंने कहा कि अदालत ने इस गाड़ी का पंजीकरण करने से मना किया है। कहते हैं गाड़ी खरीदते समय तो मैंने सब कुछ जाँच लिया था और सब कुछ कानून के अनुसार था, परंतु बाद में मुझे ज्ञान हुआ कि यह टैक्सी कंपनी ऋणी थी, जिसके कारण अदालत ने इस कंपनी को गाड़ियाँ बेचने पर प्रतिबंध लगा दी थी। उस समय कंपनी की पैंतीस गाड़ियाँ थीं जो सब ज़ब्त कर दी गई थीं। कहते हैं कंपनी के पूर्व मालिकों ने मुझे कहा कि हमने अदालत में मुकदमा किया हुआ है और जब तक फैसला नहीं हो जाता, तुम प्रतीक्षा कर लो और तुम्हें गाड़ी मिल जाएगी, खुदा तआला ने चाहा। कहते हैं ठीक है। कहते हैं उस समय मेरा तहरीक-ए-जदीद का चंदा देय था। मैंने सोचा कि पहले अपना चंदा अदा कर दूँ, इस चिंता में कि कहीं मेरा यह चंदा न रह जाए और मैं उसी सांसारिक चिंता में पड़ा रहूँ। तो वह कहते हैं मैंने तुरंत तहरीक-ए-जदीद और वक्फ़-ए-जदीद का चंदा अदा कर दिया। कहते हैं कुछ ही दिन बाद उसी कंपनी की वेबसाइट पर जाँच की तो आश्चर्यजनक रूप से जो गाड़ी मैंने खरीदी थी, उस पर से प्रतिबंध हट गया था। कहते हैं मुझे विश्वास नहीं आया कि शायद मुझे भूल हुई है। इस प्रकार मैं निरीक्षक के पास गया, जिसने जाँच करके बताया कि पैंतीस में से एक गाड़ी पर से प्रतिबंध हटा है और शेष चौतीस गाड़ियों से प्रतिबंध हटने का मामला अदालती फैसले पर निर्भर है और वह गाड़ी वही थी जो मैंने खरीदी थी और खुदा तआला की कृपा से उसके मार्ग में खर्च करने के परिणाम में यह कृपा हुई कि तुरंत खुदा तआला ने मुझे पुरस्कार से नवाजा। तो कहते हैं ये जो खुदा तआला की कृपाएँ हैं, उनको मेरी आँखों ने स्वयं देखा है कि किस प्रकार खुदा तआला अहमदियों को पुरस्कृत करता है।

फिर माली क्षेत्र स्कासो से प्रचारक साहिब लिखते हैं कि खुदा तआला अजीब ढंग से नए सदस्यों की शिक्षा करता है, उन्हें धन का बलिदान की ओर प्रवृत्त करता है। शहर के एक नए सदस्य मूसा साहिब एक मिलियन फ़्रॉक सीफ़ा की राशि लेकर आए और निवेदन किया कि इसमें से पाँच लाख राशि उनके घर का हिस्सा-संपत्ति है, चार लाख चंदा-वसीयत और एक लाख राशि तहरीक-ए-जदीद और वक्फ़-ए-जदीद के चंदे की मद में काट लें। जब उनसे इस राशि के संबंध में पूछताछ की, पूछा कि क्या कारण है तो उन्होंने बताया कि वह एक लंबे समय से विभिन्न सांसारिक परियोजनाओं के लिए राशि इकट्ठी कर रहे थे और उनकी पूरी ध्यान और प्रार्थना भी उन्हीं परियोजनाओं की प्राप्ति के लिए थी, लेकिन कहते हैं कल रात जब मैं तहज्जुद की अदायगी के बाद लेटा हूँ तो सपने में देखा कि तीन सफ़ेद रंग के वस्त्र में सुसज्जित व्यक्ति उनके पास आए और उनमें से पहले व्यक्ति ने उनसे संबोधित होकर कहा कि तुम एक अहमदी होने के बावजूद सारा ध्यान सांसारिकता की ओर रखते हो। किस प्रकार खुदा तआला शिक्षा करता है। बेहतर है कि तुम परलोक की चिंता अधिक करो। इसके बाद दूसरे व्यक्ति ने उससे कहा कि तुमने अपने घर का हिस्सा-संपत्ति अभी तक अदा नहीं किया, इसलिए अपने घर का हिस्सा-संपत्ति अदा करो। इसके बाद तीसरे व्यक्ति ने उनसे संबोधित होकर कहा कि तुम्हारे पास चार मिलियन खाते में पड़ा हुआ है, उसकी वसीयत भी तुरंत अदा करो। इसलिए एक अहमदी के रूप में मेरे लिए अब यह उचित नहीं कि खुदा तआला की ओर से मार्गदर्शन होने के बाद इस

राशि को किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग करूँ। आप इस राशि को विभिन्न चंदों की मद में काट लें। तो ऐसे घटनाक्रम देखकर न केवल उन लोगों के विश्वास टूटते हैं, बल्कि हमारे जो पुराने अहमदी हैं, उनके भी विश्वास टूटते हैं और हमें भी यह सोचना चाहिए कि किस प्रकार खुदा तआला उन लोगों का मार्गदर्शन करता है।

विरोधी कहते हैं कि यह झूठा दावा है, झूठा पैगंबर है, झूठा प्रचार है, दुकानदारी है, लेकिन खुदा तआला जिनकी इस तरह मार्गदर्शन करता है और दूर-दराज इलाके में बैठे हुए वे लोग जिन्होंने अभी कुछ समय पहले प्रतिज्ञा की है, वसीयत भी कर दी, जिन्होंने खलीफ़ा-ए-वक्त को भी नहीं देखा या केवल एमटीए के अलावा कभी नहीं मिले, पूरी तरह शायद जमाअत का साहित्य भी नहीं पढ़ा होगा, अधिकांश लोगों ने नहीं पढ़ा होता, लेकिन मौलिक चीजें तो किसी भी स्थिति में पढ़ी हुई होती हैं, उसके बावजूद खुदा तआला उनके विश्वासों को इस तरह टूट कर जाता है कि जब वे बलिदान करते हैं तो खुदा तआला उनकी बलिदानों को स्वीकार करता है और फिर उनका मार्गदर्शन भी करता है। और भी बहुत से घटनाक्रम हैं जिनको मैं फिलहाल छोड़ता हूँ। यह लंबी सूची है। किसी भी स्थिति में, इस वर्ष खुदा तआला के अनुग्रह जो जमाअत पर हैं और जो बलिदान जमाअत के सदस्यों ने दिए हैं और जमाअतों की ओर से आने वाली बलिदानों की जो सूचनाएँ हैं, उनका संक्षिप्त उल्लेख कर देता हूँ।

ये सब खुदा तआला के उपकार हैं जो हमें सदैव याद रखने चाहिए और यह देखना चाहिए कि खुदा तआला नए और पुराने आने वालों में किस प्रकार शिक्षा के दृष्टिकोण से ऐसे भाव पैदा करता है जिससे वे बलिदानों की ओर ध्यान करते हैं। किसी भी स्थिति में, दुनिया के विभिन्न देशों की जो वर्ष की रिपोर्ट है, उसके अनुसार पहली बात तो यह है कि तहरीक-ए-जदीद का जो बीता हुआ वर्ष इक्यानवेवाँ (91) वर्ष था, वह समाप्त हुआ और आज बानवेवाँ (92) वर्ष आरंभ हुआ है जिसकी मैं घोषणा कर रहा हूँ और इस वर्ष खुदा तआला की कृपा से जमाअत को 55.19 करोड़ पाउंड का बलिदान प्रस्तुत करने की सुविधा मिली जो बीते वर्ष से लगभग पंद्रह लाख चौंसठ हजार अर्थात् डेढ़ करोड़ से अधिक पाउंड बनते हैं।

कुल प्राप्ति के दृष्टिकोण से पाकिस्तान के अलावा जो जमाअतें हैं, वह तो गिनती नहीं होता, लेकिन सामान्य रूप से भी जो दुनिया में प्रथम जमाअत है, वह फिलहाल जर्मनी है और दूसरे स्थान पर ब्रिटेन है। ब्रिटेन ने भी इस वर्ष असाधारण प्राप्ति की है और यह जर्मनी के बिल्कुल निकट पहुँच गए हैं। मेरा विचार है कि यदि इसी प्रकार प्रगति की तो शायद अगले वर्ष आगे निकल जाएँ। फिर इसी प्रकार अमरीका ने भी असाधारण वृद्धि की है। इसी प्रकार कनाडा ने भी बीते वर्ष की तुलना में असाधारण वृद्धि की है। और फिर भारत है, उन्होंने भी पिछले वर्ष की तुलना में काफी वृद्धि की है। आस्ट्रेलिया ने असाधारण वृद्धि की है। इण्डोनेशिया ने भी। इसी प्रकार मध्य पूर्व की जमाअतें हैं। फिर घाना है, घाना ने भी इस वर्ष बलिदान में बहुत वृद्धि की है। और उल्लेखनीय वृद्धि करने वालों में मारीशस और हॉलैंड भी शामिल हैं।

कुल कार्यक्षमता के दृष्टिकोण से उल्लेखनीय जमाअतें जो शीर्ष स्थान पर तो नहीं आईं, लेकिन उन्होंने कार्य बहुत अच्छा किया है, जिनमें बेल्जियम है, स्वीडन है, फ्रांस है, हॉलैंड का उल्लेख पहले आया है, कबाबीर है, बंगलादेश है, बुर्कीना फ़ासो है, न्यूज़ीलैंड है। बुर्कीना फ़ासो में तो हालात बहुत खराब हैं। सिएरा लियोन है, बेनिन है, माली है, माली में भी हालात काफी खराब हैं, आतंकवादियों की ओर से आक्रमण होते रहते हैं, नाइजर है, तुर्की है, जॉर्जिया है, मध्य पूर्व की जमाअतें हैं, आस्ट्रेलिया है।

अफ्रीका में कुल प्राप्ति के दृष्टिकोण से जो पाँच जमाअतें हैं, उनका उल्लेख कर देता हूँ: प्रथम स्थान पर घाना, फिर मारीशस, फिर नाइजीरिया, फिर बुर्कीना फ़ासो, फिर तंज़ानिया। और इसके साथ और भी हैं। सम्मिलित होने वालों की कुल संख्या सत्रह लाख तक है और इस वर्ष रिपोर्टों के अनुसार कार्यालय छः में दो वर्ष पहले जो छठा कार्यालय आरंभ हुआ था, जिसकी घोषणा हुई थी, उसमें सम्मिलित होने वालों की संख्या तैंतालीस हजार पाँच सौ अठासी है।

जमाअतें इस बात को भी ध्यान में रखें कि तहरीक-ए-जदीद में जो नए सम्मिलित होने वाले हैं, उनको कार्यालय छः में गिना करें और इसकी रिपोर्ट फिर

वकालत-ए-माल को भेजा करें।

जर्मनी की पहली दस जमाअतें: रोडगाउ, ओसाब्रुक, पिन्नेबर्ग, निद्दा, फ़्लोर्सहाइम, रोडरमार्क, ब्रेमेन, न्यूवीड, फ़ाइडबर्ग मिटे, कोबलन्ज़ हैं। और दस इमारतें जो हैं, उनकी ये हैं: हैम्बर्ग, फिर फ़्रैंकफ़र्ट, फिर ग़ोस गेराउ, विस्बादन, रीडश्टाड, मानहाइम, डीट्ज़ेनबाख, मोरफ़ेल्डेन वालडोर्फ, रुसेल्ज़हाइम, डार्मश्टाट।

ब्रिटेन के पहले पाँच क्षेत्र जो हैं, उनमें नंबर एक पर इस्लाम आबाद, फिर बैतुल फ़ुतूह, फिर मस्जिद फ़ज़ल, फिर बैतुल एहसान, फिर उत्तर पूर्व। उनकी बड़ी जमाअतें जो दस हैं, उनमें इस्लाम आबाद नंबर एक, फिर ऐश, फिर वूस्टर पार्क, साउथ चीम, वॉलसाल, फ़ारनहम नॉर्थ, आल्डरशॉट साउथ, मस्जिद फ़ज़ल, फ़ारनहम साउथ, यूवल।

छोटी जमाअतें जो अच्छा कार्य करने वाली हैं, उनमें लीमिंगटन स्या, स्पिन वैली, कीथली, फ़्रंटवुड और जामिआ यूके।

अमरीका की जो पहली दस जमाअतें हैं, उनमें उत्तर वर्जीनिया, मैरीलैंड, लॉस एंजिलिस, सीएटल, शिकागो, डलस, सिलिकॉन वैली, उत्तर जर्सी, दक्षिण वर्जीनिया, केन्द्रीय जर्सी, बाल्टीमोर, डेट्रॉयट।

और कनाडा की स्थानीय इमारतों में वॉन, फिर कैलगरी, फिर पीस विलेज, फिर वैकूवर, टोरंटो वेस्ट, फिर ब्रैम्पटन ईस्ट, मिसिसागा। और प्राप्ति के दृष्टिकोण से कनाडा की उल्लेखनीय जमाअतें जो हैं, उनमें हैं: हैमिल्टन माउंटेन, हैमिल्टन, एडमंटन वेस्ट, हदीका अहमद, ओटावा ईस्ट, ओटावा वेस्ट, विनिपेग, रेजिना, वुड रॉयल, येलो नाइफ़।

पाकिस्तान में सामान्य प्राप्ति के दृष्टिकोण से प्रथम स्थान पर लाहौर, फिर दूसरा रबवाह, फिर तीसरा कराची। जिला स्तर पर इस्लाम आबाद नंबर एक है, फिर फ़ैसल आबाद, फिर सियालकोट, फिर सरगोधा, उमरकोट, नारोवाल, मीरपुर ख़ास, रहीम यार ख़ाँ, टोबा टेक सिंह, लेह। अधिक बलिदान करने वाली जो पाकिस्तान की शहरी जमाअतें हैं, उनमें इमारत टाउनशिप लाहौर, इमारत रक्षा लाहौर, इमारत दारुज़्ज़िक्र लाहौर, इमारत अल्लामा इक़बाल टाउन लाहौर, इमारत बैतुल फ़ज़ल फ़ैसल आबाद, बहावलनगर, क्रेटा, बहावलपुर, लोधर्राँ, साहीवाल।

भारत की पहली दस जमाअतें जो प्रांत हैं: केरल, तमिल-नाडु, तेलंगाना, उड़ीसा, जम्मू-कश्मीर, कर्नाटक, पंजाब, बंगाल, महाराष्ट्र और दिल्ली। और पहली दस जमाअतें बलिदान के दृष्टिकोण से जो हैं: हैदराबाद, कोयंबटूर (तमिल नाडु), फिर क्रादियान, कालीकट, मेला पालम, मेनजेरी (केरल), बंगलौर, कैरिंग, कलकत्ता, करोलाई।

आस्ट्रेलिया की दस जमाअतें जो हैं, वे हैं: नंबर एक पर मेलबोर्न लैंग वॉरिन, मेलबोर्न बैरिक, मार्सडेन पार्क, पेनरिथ, मेलबोर्न वेस्ट, कैसल हिल, एडिलेड वेस्ट, मेलबोर्न क्लाइड, पर्थ, मेलबोर्न ईस्ट।

तहरीक-ए-जदीद के जो वर्ष हैं, जिस प्रकार मैंने बताया, उनका बानवेवाँ (92) वर्ष आरंभ हुआ है तो कार्यालय एक का बानवेवाँ (92) वर्ष होगा, इसके जो पुराने खाते हैं, वे जारी हैं। कार्यालय दो का बयासीवाँ (82) वर्ष है। कार्यालय तीन का इकसठवाँ (61) वर्ष है। कार्यालय चार का इकतालीसवाँ (41) वर्ष है। कार्यालय पाँच का बाईसवाँ (22) वर्ष है। और कार्यालय छः का अब तीसरा (3) वर्ष आरंभ हुआ है। जैसा कि पहले मैंने कहा कि नए आने वाले जो हैं, उनको कार्यालय छः में गिना जाए।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "मेरे प्यारे मित्रों! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मुझे खुदा तआला ने सच्चा उत्साह आप लोगों की सहानुभूति के लिए प्रदान किया है और एक सच्ची पहचान आप सज्जनों की अधिकता-ए-विश्वास-और-ज्ञान के लिए मुझे अता की गई है। इस पहचान की आपको और आपकी संतान को अत्यंत आवश्यकता है। सो मैं इसलिए तत्पर खड़ा हूँ कि आप लोग अपने पवित्र धनों से अपनी धार्मिक महत्वपूर्ण कार्यों के लिए सहायता दें और प्रत्येक व्यक्ति जहाँ तक खुदा तआला ने उसे विस्तार और शक्ति और क्षमता दी है, इस मार्ग में कंजूसी न करे। और खुदा तआला और रसूल से अपने धनों को अग्रणी न समझे और फिर मैं जहाँ तक मेरे संभव में है,

रचनाओं के माध्यम से उन ज्ञान और बरकतों को एशिया और यूरोप के देशों में फैलाऊँ जो खुदा तआला ने मुझे दिए हैं।"

(इज़ाला-ए-औहाम भाग दो, रूहानी खज़ायन, जिल्द 3, पृष्ठ 516)

अतः खुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जिम्मे जो मिशन किया है, अब हमारा कार्य है कि हम इस मिशन को पूरा करें। एशिया, यूरोप, अमरीका, अफ्रीका, अरब देश, दक्षिण अमरीका के देश और द्वीप हर जगह इन धन के बलिदानों के कारण खुदा तआला हमें इस्लाम का संदेश पहुँचाने की सुविधा दे रहा है। और केवल यही नहीं कि यहाँ यूरोप में बैठे हुए लोगों के धन के बलिदान हैं, बल्कि वहाँ के लोग भी, जैसा कि मैंने उदाहरण भी प्रस्तुत किए हैं, धन के बलिदानों में बहुत बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं।

खुदा तआला उनकी बलिदानों को स्वीकार करे और उनके धनों और जीवनों में बरकत डाले और हमारी कोशिशों में असीम बरकत डाले और उनके उत्तम परिणाम पैदा करे और हम शीघ्र ही दुनिया में एक खुदा तआला की सत्ता को स्थापित होता हुआ देखें और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के झंडे को लहराता हुआ देखें।

(प्रकाशित: अल-फ़ज़ल अंतर्राष्ट्रीय, 28 नवंबर 2025 ई., पृष्ठ 1 से 8)



पृष्ठ 1 का शेष

से सूक्ष्म पहलुओं पर यथाशक्ति आचरण करे।

ईमानी वायदों से अभिप्राय वे वादे हैं जो मनुष्य बैअत (प्रतिज्ञा) और ईमान लाने के समय उनकी पुष्टि करता है, जैसे यह कि वह हत्या नहीं करेगा, चोरी नहीं करेगा, झूठी गवाही नहीं देगा, खुदा तआला का किसी को साझी नहीं ठहराएगा और इस्लाम और पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अनुसरण पर मरेगा।

(ब्राहीन-ए-अहमदिया भाग पाँच का परिशिष्ट, रूहानी खज़ायन जिल्द 21 पृष्ठ 208 से 210)



### 130 वां जलसा सालाना क़ादियान

26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने 130वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंजूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयारी आरंभ कर दें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और इसे हर प्रकार से सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफल होने के लिए जमाअत के सभी मित्र दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)



पृष्ठ 1 का शेष

बात कही तो इसके बावजूद कि मक्का में खुलेआम घूमना रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए खतरे का कारण था और फिर अबू जहल आपका सबसे कठोर शत्रु था और हो सकता था कि वह आपको कोई क्षति पहुँचाए, आप तुरंत उठे और उसके साथ चलकर अबू जहल के घर पर जा पहुँचे और दरवाजा खटखटाय। अबू जहल दस्तक की आवाज सुनकर बाहर निकला। आपने फ़रमाया: इस व्यक्ति का तुमने कुछ रुपया लिया हुआ है, उसे तुरंत अदा कर दो। अबू जहल बिना कुछ कहे अन्दर गया और रुपया लाकर उसने उस व्यक्ति को सौंप दिया। अबू जहल का मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कहने पर एक व्यक्ति को उसका रुपया दे देना कोई ऐसी बात न थी जो छिपी रहती। जंगल की आग की तरह यह बात मक्का में फैल गई और लोगों में चर्चाएँ आरंभ हो गई कि अबुल हकम (अबू जहल) हमें तो कहता है मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बात न मानो और स्वयं उससे इतना डर गया कि एक मिनट के भीतर रुपया देने के लिए तैयार हो गया। जब उसने यह बातें सुनीं तो वह कहने लगा: खुदा तआला की शपथ, यदि तुम मेरी जगह होते तो तुम भी

वही काम करते जो मैंने किया है। क्योंकि जब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आए तो मुझे उनके दाएँ और बाएँ दो विशाल ऊँट खड़े दिखाई दिए, जिन्हें देखकर मेरा हृदय अत्यंत भयभीत हो गया और मैंने समझा कि यदि मैंने उनकी बात न मानी तो यह दोनों ऊँट मुझे चीर कर खा जाएँगे। अब यह बात तो खुदा तआला ही बेहतर जानता है कि उसे कोई ऐसा दृश्य दिखाई दिया था या सत्य का प्रभाव उस पर छा गया था, परंतु किसी भी स्थिति में, जब रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हिल्फुल फुज़ूल के समझौते के सम्मान में एक पीड़ित व्यक्ति का अधिकार दिलाने के लिए अत्यंत खतरों की परवाह न करते हुए उसके पास गए तो सच्चाई के प्रभाव ने उसकी दुष्टता की आत्मा को कुचल दिया और वह पीड़ित का अधिकार देने के लिए तैयार हो गया।

फिर रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को वायदा पूरा करने का इतना ध्यान था कि हुदैबिया की संधि के अवसर पर जब यह समझौता हुआ कि मक्का के लोगों में से कोई युवक मुसलमान हुआ तो उसे उसके रिश्तेदारों की ओर वापस कर दिया जाएगा, परंतु जो मुसलमान मक्का वालों की ओर वापस जाएगा, उसे मक्का वाले वापस करने के लिए बाध्य नहीं होंगे। तो अभी इस समझौते की स्याही भी सूखी नहीं हुई थी कि सुहैल जो मक्का वालों की ओर से समझौता कर रहा था, उसका अपना बेटा रस्सियों से जकड़ा हुआ और घावों से लहुलुहान रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने आकर गिरा और उसने कहा: हे खुदा तआला के रसूल! मैं हृदय से मुसलमान हूँ परंतु मेरा पिता इस्लाम के कारण मुझे कष्ट दे रहा है। आज मेरा पिता यहाँ आया तो मैं अवसर पाकर निकल भागा और यहाँ आ गया। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अभी उसे कोई उत्तर नहीं दिया था कि उसका पिता कहने लगा: समझौता हो चुका है, अब इसे मेरे साथ जाना पड़ेगा। अबू जन्दल की स्थिति उस समय इतनी दर्दनाक थी कि मुसलमानों की आँखों से रक्त के आँसू बहने लगे। स्वयं अबू जन्दल ने भी रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से निवेदन किया कि हे खुदा तआला के रसूल! क्या आप मुझे फिर मक्का वालों की ओर वापस कर देंगे ताकि यह लोग मुझे पहले से भी अधिक कष्ट दें? परंतु आपने फ़रमाया: खुदा तआला के रसूल समझौते नहीं तोड़ा करते। तुम्हें किसी भी स्थिति में वापस जाना पड़ेगा। तुम धैर्य से काम लो और खुदा तआला पर भरोसा रखो। अतः उसे मक्का में वापस भिजवा दिया गया। फिर जब आप मदीना पहुँचे तो मक्का का एक और युवक अबू बसीर रज़ियल्लाहु अन्हु आपके पीछे-पीछे दौड़ता हुआ मदीना पहुँचा परंतु रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे भी समझौते के अनुसार मक्का वापस जाने के लिए बाध्य किया। इसी प्रकार वायदा पूरा करने का आपको इतना ध्यान था कि एक बार एक सरकार का दूत रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास कोई संदेश लेकर आया और आपकी संगति में कुछ दिन रहकर इस्लाम की सच्चाई का विश्वासी हो गया। उसने रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से निवेदन किया कि हे खुदा तआला के रसूल, मैं अपने इस्लाम का प्रकटीकरण करना चाहता हूँ। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: यह उचित नहीं। तुम अपनी सरकार की ओर से एक विशेष समझौते पर नियुक्त हो। तुम इसी स्थिति में वापस जाओ और वहाँ जाकर यदि तुम्हारे हृदय में इस्लाम की प्रेम फिर भी बनी रहे तो दोबारा आकर इस्लाम स्वीकार कर लो।

(अबू दाऊद, बाब अल-वफा बिल-अहद)

फिर मुसलमानों को भी वायदा पूरा करने का इतना ध्यान रहता था कि एक बार अविश्वासियों ने युद्ध के बीच में ही धोखे से एक हब्शी (अफ्रीकी) मुसलमान से समझौता कर लिया और उन्होंने किले का दरवाजा खोल दिया। जब सेना आगे बढ़ी ताकि किले में प्रवेश करे तो उन्होंने कहा: हमारा तो तुमसे समझौता हो चुका है। कमांडर ने कहा: मेरे साथ कोई समझौता नहीं हुआ। उन्होंने कहा: हमने एक हब्शी से समझौता कर लिया था और उसने कुछ शर्तों पर हमें सुरक्षा दी थी। कमांडर ने कहा: उसे समझौता करने का क्या अधिकार था? समझौता तो मेरे साथ होना था। उन्होंने कहा: हम नहीं जानते, हम आपसे समझौता कर चुके हैं। जब यह मतभेद बढ़ा तो इस्लामी सेना के कमांडर ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह पूरा घटनाक्रम लिख दिया और पूछा कि अब क्या किया जाए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया कि खुदा तआला ने वायदा पूरा करने को बहुत महानता और महत्व दी है। अतः तुम इस समझौते को पूरा करो और उस समय तक इस समझौते पर कायम रहो जब तक कि दूसरा पक्ष स्वयं इस समझौते का उल्लंघन न करे।

(तबरी, जिल्द 5 पृष्ठ 2568)

(तफ़सीर कबीर, जिल्द छठा, पृष्ठ 133)



## हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ की बरकतों की हामिल सिंगापुर व ऑस्ट्रेलिया 2013 ई. की यात्रा

(भाग -1)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ का सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, म्यांमार (बर्मा) और श्रीलंका की राष्ट्रीय कार्यकारी समितियों के सदस्यों के साथ बैठक

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ की बैठक में जमाअत की प्रगति और सदस्यों के शिक्षण व प्रशिक्षण के संबंध में महत्वपूर्ण निर्देश

सिंगापुर से ऑस्ट्रेलिया के लिए प्रस्थान। ऑस्ट्रेलिया में शुभ आगमन और जोरदार स्वागत।

ऑस्ट्रेलिया सरकार की ओर से एक संसद सदस्य ने हवाई अड्डे पर हज़ूर अनवर का स्वागत किया।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें। सैकड़ों जमाअत सदस्यों ने अपने प्यारे आका से व्यक्तिगत भेंट का सौभाग्य प्राप्त किया।

'डेली टेलीग्राफ', 'दी स्टैंडर्ड' और 'ब्लैक टाउन सन' के अख़बारी प्रतिनिधियों का हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ से साक्षात्कार। 'डेली टेलीग्राफ' में हज़ूर अनवर के साक्षात्कार का प्रकाशन।

जलसा सालाना के प्रबंधों का निरीक्षण और सम्मेलन में कर्तव्य दे रहे कार्यकर्ताओं को महत्वपूर्ण सलाह

जुमा के संदेश से ऑस्ट्रेलिया वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन। राष्ट्रीय रेडियो और राष्ट्रीय टीवी एबीसी के प्रतिनिधियों का हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ से साक्षात्कार।

30 सितम्बर, सोमवार 2013 ई. (भाग दो)

शेष ..

कार्यक्रम के अनुसार डेढ़ बजे हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ने 'मस्जिद बैतुल हुदा' पधारकर नमाज़ जुहर व अस्त्र एकत्रित करके पढ़ाई। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ने नमाज़ की अदायगी के बाद अपने निवास स्थान की ओर जाते हुए अध्यक्ष खुदामुल अहमदिया ऑस्ट्रेलिया से पूछा कि अब तक जो लोग पहुँच चुके हैं उनकी संख्या क्या है। जिस पर अध्यक्ष महोदय ने कहा कि अभी हमने संख्या की गिनती शुरू नहीं की। बृहस्पतिवार के दिन से उनकी गिनती होगी। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने पूछा फिर उनकी जाँच आदि किस तरह की जा रही है जिस पर अध्यक्ष महोदय ने कहा कि जमाअत के हर सदस्य का पहचान पत्र बना हुआ है। हर सदस्य गेट पर अपना पहचान पत्र दिखाकर ही अंदर आ रहा है। स्कैनिंग की व्यवस्था जारी है।

बाद में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़अपने निवास स्थान पर चले गए।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें

साढ़े छह बजे हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़अपने कार्यालय पधारे और कार्यक्रम के अनुसार पारिवारिक मुलाकातें शुरू हुईं। आज सिडनी शहर की एक जमाअत "Mount Druitt Sydney" की 34 परिवारों के 155 लोगों ने मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया और हर एक ने हज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें खिंचवाईं। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने स्नेहवश शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान की और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान की।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम रात आठ बजे तक जारी रहा। मुलाकातों के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने 'मस्जिद बैतुल हुदा' में पधारकर नमाज़ मग़रिब व इशा एकत्रित करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़अपने निवास स्थान पर चले गए।

मस्जिद बैतुल हुदा का संक्षिप्त परिचय

जमाअत अहमदिया ऑस्ट्रेलिया को 1983 ई. में सिडनी शहर से बाहर "Marsden Park" के इलाके में 28 एकड़ ज़मीन का भूखंड खरीदने की सफलता मिली। हज़रत खलीफ़तुल मसीह अर राबे रहमतुल्लाह ने अपने पहले ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान 30 सितम्बर 1983 ई. को यहाँ पहली अहमदिया मस्जिद बैतुल हुदा की आधारशिला रखी।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम के एक सहाबी हज़रत मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस मस्जिद की नींव में एक ईंट लगाई। आप हज़ूर अनवर के विशेष निर्देश पर इस मस्जिद की आधारशिला रखने के समारोह में शामिल होने के लिए पाकिस्तान से ऑस्ट्रेलिया पधारे थे।

जमाअत अहमदिया ऑस्ट्रेलिया को यह गौरव प्राप्त है कि जहाँ इस महाद्वीप में 1903 ई. में अहमदियत की शुरुआत हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु

वस्सलाम के एक सहाबी हज़रत हसन मूसा खान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो के द्वारा हुई। वहाँ इस महाद्वीप में पहली अहमदिया मस्जिद की नींव में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक सहाबी को ईंट रखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इस मस्जिद का निर्माण 1989 ई. में पूरा हुआ और हज़ूर रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने दूसरे ऑस्ट्रेलिया दौरे में 14 जुलाई 1989 ई. को इस मस्जिद का उद्घाटन किया।

मस्जिद के एक तरफ हाईवे Richmond Road और दूसरी तरफ Hansworth Road गुजरती है। इस मस्जिद की दो मंजिला सुंदर इमारत अपने सफेद रंग और गुंबद और मीनार की वजह से दूर से ही दिखाई देती है और दोनों ओर से यात्रा करने वाले लोग इसे देखते हैं।

इस मस्जिद में नमाज़ियों के लिए दो बड़े हॉल हैं साथ ही दो बड़े कमरे और कार्यालय, पुस्तकालय, मिशन हाउस मौजूद है। मस्जिद की एक मीनार जो मीनारतुल मसीह के तर्ज पर बनाई गई है सौ फुट ऊँची है और साथ एक बहुत बड़ा गुंबद भी है जिसका व्यास 24 फुट है और जिसकी चोटी की ऊँचाई सात फुट है। इस गुंबद का निर्माण जमीन पर किया गया। स्टील फ्रेम अहमदी सदस्यों ने स्वयं तैयार किया और इस पर फाइबर ग्लास चढ़ाने का काम अहमदी महिलाओं ने किया जो वास्तव में एक उपलब्धि है। यह गुंबद तैयार होने के बाद इतना बड़ा और भारी था कि इसे एक क्रेन की मदद से उठाकर मस्जिद की छत पर रखा गया।

मुख्य सड़क से जमाअत के इस भूखंड की दूरी 1.3 किलोमीटर है। जमाअत ने 1.3 किलोमीटर की दोतरफा पक्की सड़क बनाई है जो मस्जिद तक आती है। यह सड़क और इसके आसपास का इलाका जमाअत की अपनी संपत्ति है। मुख्य सड़क के ऊपर भी जहाँ से यह सड़क शुरू होती है मुख्य द्वार बनाया गया है जहाँ अहमदिया मिशन का बोर्ड लगा हुआ है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़के ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान इस मस्जिद को रंग-बिरंगी रोशनियों से सजाया गया है। रात को यह मस्जिद बहुत सुंदर नज़ारा पेश करती है।

02 अक्टूबर, बुधवार 2013 ई.

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे 'मस्जिद बैतुल हुदा' पधारकर नमाज़ फज़्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ वापस अपने निवास स्थान पर चले गए।

सुबह हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने प्राप्त होने वाली कार्यालयीन डाक, पत्र और रिपोर्टें देखीं और विभिन्न कार्यालयीन कार्यों की पूर्ति में व्यस्त रहे।

कार्यक्रम के अनुसार सुबह ग्यारह बजे हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़अपने कार्यालय पधारे।

अख़बारी प्रतिनिधियों का हज़ूर अनवर से साक्षात्कार

हज़ूर अनवर के आगमन से पहले अख़बार "Daily Telegraph" (यह राज्य का अख़बार है) और स्थानीय अख़बार "The Standard" और स्थानीय साप्ताहिक अख़बार "Blacktown Sun" के प्रतिनिधि हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़से साक्षात्कार लेने के लिए पहुँचे हुए थे।

...एक पत्रकार ने पहला सवाल यह किया कि अहमदी और दूसरे मुसलमानों में क्या अंतर और मतभेद है?

इस सवाल के उत्तर में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा था कि एक ऐसा समय आएगा कि नाम के सिवा इस्लाम का कुछ बाकी नहीं रहेगा। शब्दों के सिवा कुरआन का कुछ बाकी नहीं रहेगा यानी लोग इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को भूल चुके होंगे। उनकी मस्जिदें बाहर से आबाद होंगी लेकिन मार्गदर्शन से खाली होंगी। तो ऐसे समय में अल्लाह तआला मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और इमाम महदी अलैहिस्सलाम को भेजेगा जो इस्लाम की सच्ची और वास्तविक शिक्षाएँ लोगों के सामने पेश करेगा और इस्लाम का असली चेहरा दिखाएगा।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार हम यकीन रखते हैं और यह हमारा विश्वास है कि हज़रत मिर्जा गुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम वस्सलाम अल्लाह तआला की ओर से मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और महदी अलैहिस्सलाम के रूप में नियुक्त हुए हैं। और हम कहते हैं कि जिस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने की भविष्यवाणी थी वह तो आ चुका। जबकि दूसरे मुसलमान कहते हैं कि अभी नहीं आया और वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आने के मानने वाले हैं और इस इंतज़ार में हैं कि वह आसमान से उतरें और वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद नबी के रूप में आएँगे।

हम कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार आसमान से तो कोई नहीं उतरेगा बल्कि जिसके आने की भविष्यवाणी है वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के समान होकर आएगा और वह आ चुका है।

हम कहते हैं कि हज़रत मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम वस्सलाम गैर-तशरीई नबी हैं और कोई नया धार्मिक कानून लेकर नहीं आए। इसलिए यह खातमुन्नबियीन के विरुद्ध नहीं है और इससे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुवत की मुहर नहीं टूटती। जबकि दूसरे मुसलमान जो ईसा अलैहिस्सलाम के आने के प्रतीक्षक हैं वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के खातमुन्नबियीन होने के बावजूद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नबी के रूप में आने के ही मानने वाले हैं।

इसलिए हमारे और दूसरे मुसलमानों के बीच आजकल बड़ा मतभेद यही है कि हम हज़रत मिर्जा गुलाम अहमद अलैहिस्सलाम को गैर-तशरीई नबी मानते हैं जबकि दूसरे कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं आ सकता। जबकि हम कहते हैं कि नया धार्मिक कानून लाने वाला नबी नहीं आ सकता लेकिन गैर-तशरीई नबी आ सकता है और यह बात हर्गिज़ खातमुन्नबियीन के विरुद्ध नहीं है।

...एक पत्रकार ने यह सवाल किया कि हज़ूर का ऑस्ट्रेलिया आने का उद्देश्य क्या है?

इस सवाल के उत्तर में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मैं जहाँ भी जाता हूँ तो मेरा बड़ा उद्देश्य यह होता है कि अपनी जमाअत के सदस्यों से मिलूँ। उनकी प्रगति देखूँ, उनकी समस्याएँ देखूँ, उनकी व्यक्तिगत परेशानियाँ देखूँ, उनका मार्गदर्शन करूँ। मैं उनसे व्यक्तिगत मुलाक़ात भी करता हूँ जिससे उनके हालात का पता चलता है। फिर जहाँ बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होते हैं और सम्मेलन का आयोजन होता है वहाँ मैं भाषण भी देता हूँ और उन्हें उच्च नैतिक मूल्यों को स्थापित करने की ओर ध्यान दिलाता हूँ और यह कि जहाँ आप रहते हैं वह आपका देश है तो अपने देश से वफ़ादारी और कानूनों का पालन करने की ओर ध्यान दिलाता हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन के अनुसार देश से प्रेम हमारे विश्वास का हिस्सा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा था: हुब्बुल वतन मिनल ईमान (देश से प्रेम विश्वास का हिस्सा है)।

एक सवाल के उत्तर में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह ऑस्ट्रेलिया का मेरा दूसरा दौरा है। इससे पहले मैं साल 2006 ई. में आया था।

...पत्रकार ने एक सवाल यह किया कि परिवारों की किस तरह की परेशानियाँ होती हैं? इसके उत्तर में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि विभिन्न परेशानियाँ होती हैं और कुछ उनकी व्यक्तिगत परेशानियाँ होती हैं जो मैं यहाँ बयान नहीं कर सकता। मैं अपने जुमा के संदेशों और भाषणों में अहमदियों को ध्यान दिलाता रहता हूँ कि इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं पर अमल करो। आपस में प्रेम

व प्यार से रहो और भाईचारे का माहौल कायम रखो और एक दूसरे का ख्याल रखो और हर एक के अधिकार अदा करो।

...इस सवाल पर कि क्या आपने ऑस्ट्रेलिया के भीतर यात्रा की है?

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अभी तक अपने इस मौजूदा दौर में तो यात्रा नहीं की। लेकिन पिछले दौर के दौरान कुछ जगहों का दौरा किया था और यहाँ के मूल निवासियों से भी मिला था। यह आदिवासी इस समय दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यता है।

...एक पत्रकार ने सवाल किया कि क्या अहमदिया मुस्लिम जमाअत को ऑस्ट्रेलियाई जमाअत में स्वीकार कर लिया गया है?

इस सवाल के उत्तर में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने कहा: अहमदिया मुस्लिम जमाअत मुसलमान जमाअतों में से ऐसा सबसे बड़ा जमाअत है जो हर समाज में स्वीकार किया जाता है क्योंकि हम खुलकर इस बात का इजहार करते हैं कि जिस देश में भी हम रहते हैं, उस देश से प्रेम करते हैं और अपने देश से प्रेम हमारे विश्वास का हिस्सा है। दूसरे, हम देश के कानूनों का पालन करने वाले हैं। हमारा संदेश शांति का संदेश है और हमारा नारा 'सबसे प्रेम, किसी से घृणा नहीं' है। इस वजह से मैं नहीं समझता कि कोई भी हमें नापसंद करेगा। हमें हर तरफ सम्मान की नज़र से ही देखा जाता है।

...एक पत्रकार ने यह सवाल किया कि दुनिया के जो मौजूदा हालात हैं उनमें शांति कैसे कायम हो सकती है?

इस सवाल के उत्तर में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मुझे जहाँ भी अवसर मिलता है मैं सबको कहता हूँ कि सही न्याय और इंसाफ ही शांति ला सकता है और सचा न्याय वही है जो कुरआन करीम के अनुसार हो और वह यह कि अगर तुम्हें अपने विरुद्ध, अपने रिश्तेदारों और अपनों के विरुद्ध भी गवाही देनी पड़े तो गवाही दो। यह सचा इस्लाम है और इससे समाज में शांति और न्याय की स्थापना होती है।

...सीरिया में शांति की स्थापना के संदर्भ में एक सवाल पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि सीरिया में शांति उसी समय कायम हो सकती है जबकि दोनों पक्ष यानी सरकार और वह विरोधी लोग जिन्होंने सरकार के विरुद्ध विद्रोह किया हुआ है, आपस में एक दूसरे के साथ सभ्य और न्यायपूर्ण तरीके से पेश आएँ और सभ्यता के दायरे में रहकर अपने मामलों का समाधान करें।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: दो तीन हफ़्ता पहले मैंने अपने जुमा के संदेश में इस मामले पर बात की थी और बहुत स्पष्ट किया था कि उस समय तक सीरिया का मामला हल नहीं हो सकता और वहाँ शांति कायम नहीं हो सकती जब तक कि दोनों पार्टियाँ आपसी सहिष्णुता का प्रदर्शन न करें।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: सीरिया में अलवी और सुन्नी दो बड़े संप्रदाय हैं। इस समय सरकार अलवियों के पास है। हालाँकि सरकार में कुछ हद तक सुन्नी संप्रदाय के लोग भी शामिल हैं। लेकिन इसके बावजूद सुन्नियों के अधिकारों का हनन किया जाता है और उन्हें सम्मान नहीं दिया जाता जिसकी वजह से उनकी ओर से अलगाव का नारा है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अगर यह सुन्नी लोग सरकार में आ जाएँ और उनकी सरकार बन जाए तो तब भी यह लोग सही न्याय और इंसाफ के साथ शासन नहीं कर सकेंगे।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आजकल जो विपक्षी गुट है उसमें चरमपंथी गुट अलकायदा, तालिबान आदि भी शामिल हो रहे हैं जिसकी वजह से हालात और खराब हो रहे हैं। इसलिए अगर सरकार और विरोधी गुट अपनी जिम्मेदारी नहीं समझेंगे और न्याय से काम नहीं लेंगे तो फिर इस देश की शांति पूरी तरह तबाह हो जाएगी। सिर्फ इस देश की नहीं बल्कि इस क्षेत्र की भी शांति तबाह होगी और बाकी दुनिया भी प्रभावित होगी और उनकी शांति भी तबाह होगी।

एक सवाल के उत्तर में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यहाँ ऑस्ट्रेलिया सिडनी में ठहरने के दौरान मेलबर्न और ब्रिस्बेन जा रहा हूँ।

...खिलाफत के पद पर सुशोभित होने के संदर्भ में एक सवाल के उत्तर में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैं आखिरी पल तक नहीं जानता था कि इस पद पर सुशोभित होंगे। खिलाफत का चुनाव एक निर्वाचक मंडल करता है। चुनाव से पहले कोई भी नहीं जानता कि किसका नाम पेश होगा। वहीं मौके पर ही नाम पेश होते हैं और मतदान होता है। जो अधिक मत प्राप्त करता है वह इस पद पर सुशोभित होता है। निर्वाचक मंडल के बाहर वाला भी चुना जा सकता है।

<b>EDITOR</b> SHAIKH MUJAHID AHMAD Editor : +91-9915379255 e-mail : badarqadian@gmail.com www.akhbarbadr.in	REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553	<b>MANAGER :</b> SHAIKH MUJAHID AHMAD Mobile : +91-9915379255 e-mail:managerbadrqnd@gmail.com www.alislam.org/badr
	Weekly <b>BADAR</b> Qadian Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 11 December 2025 Issue No. 50	

एक सवाल के उत्तर में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैंने पाकिस्तान से शिक्षा प्राप्त की। अपना जीवन समर्पित किया। घाना में आठ साल काम किया। इसके बाद रब्बाह पाकिस्तान में विभिन्न जमाअती जिम्मेदारियाँ अदा करता रहा। फिर 2003 ई. में खलीफ़ा चुना गया।

...पत्रकार ने सवाल किया कि आप लोगों को, चाहे वह मुसलमान हों या गैर-मुस्लिम, उनको क्या सलाह देते हैं?

इस सवाल के उत्तर में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हम सब इंसान हैं और अल्लाह तआला की रचना हैं। अल्लाह तआली अपनी रचना से प्रेम करता है। हमें भी चाहिए कि हम एक दूसरे के साथ प्रेम व भाईचारे से रहें और एक दूसरे के अधिकार अदा करें। हममें से हर एक अपनी जिम्मेदारी अदा करे और हर एक दूसरे से वैसा ही व्यवहार करे जैसा अल्लाह चाहता है।

एक सवाल के उत्तर में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैं दूसरे मुसलमानों के बारे में तो नहीं कह सकता। लेकिन जो अहमदी युवा हैं वह समाज में शांति की स्थापना के बारे में दिन-रात प्रयत्नशील हैं और सृष्टि की भलाई के लिए काम करते हैं। चैरिटी वॉक करते हैं। अहमदिया यूथ ऑर्गनाइजेशन यूके ने चैरिटी वॉक के ज़रिए तीन लाख पचास हज़ार पाउंड एकत्रित किए और इसमें से अस्सी प्रतिशत रकम गैर-मुस्लिम चैरिटी को दी।

अमरीका में हमारे युवाओं ने 'मुस्लिम फॉर लाइफ़' के नाम से एक कार्यक्रम आयोजित किया और दस हज़ार से ज़्यादा रक्त के थैले एकत्रित करके सरकार के अस्पतालों में दिए।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह जमाअत अहमदिया की खूबसूरती है कि वह खलीफ़ा ए वक़्त के अधीन काम करती है और खलीफ़ा ए वक़्त उनकी रहनुमाई करता है। दूसरी मुस्लिम जमाअतों का कोई नेता नहीं है। हम एक नेतृत्व के तहत दुनिया के 204 देशों में हैं और हर जगह हमारी शिक्षा, हमारा नारा, हमारा चरित्र और हमारा प्रशासनिक ढाँचा एक ही है। दूसरे मुसलमानों की तरह हममें किसी तरह की कोई चरमपंथिता नहीं है। हम शांति से रहने वाले हैं और शांति की शिक्षा देते हैं और जिस देश में भी रहते हैं उसके वफ़ादार हैं और कानून का पालन करने वाले हैं।

यह साक्षात्कार साढ़े ग्यारह बजे समाप्त हुआ।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाक़ातें

इसके बाद कार्यक्रम के अनुसार पारिवारिक मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सत्र में सिडनी की एक जमाअत Mount Druitt की 38 परिवारों के 180 लोगों ने भेंट का सौभाग्य प्राप्त किया। इन सभी सदस्यों ने अपने आक्रा के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने स्नेहवश शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान की और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट प्रदान की।

मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम एक बजकर तीस मिनट तक जारी रहा। बाद में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुल हुदा पधारकर नमाज़ें एकत्रित करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़अपने निवास स्थान पर चले गए।

दोपहर बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ कार्यालयीन कार्यों की पूर्ति में व्यस्त रहे। साढ़े छह बजे हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे और परिवारों व व्यक्तिगत सदस्यों की मुलाक़ातें शुरू हुईं।

आज शाम के इस कार्यक्रम में सिडनी की 47 परिवारों के 232 लोगों ने अपने प्यारे आक्रा से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। हर एक ने तस्वीर भी खिंचवाई और अपने आक्रा से उपहार भी प्राप्त किए।

मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम आठ बजकर चालीस मिनट तक जारी रहा। बाद में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ने मस्जिद बैतुल हुदा पधार-

कर नमाज़ मग़रिब व इशा एकत्रित करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़अपने निवास स्थान पर चले गए।

ऑस्ट्रेलिया दुनिया में एकमात्र ऐसा देश है जो पूरे महाद्वीप पर फैला हुआ है। यह दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप और सबसे छोटा महाद्वीप है। इस देश का एक तिहाई हिस्सा रेगिस्तान से बना है। इस देश की आबादी 19 मिलियन से अधिक है जिसमें से आबादी का अस्सी प्रतिशत हिस्सा समुद्र के किनारे बसा हुआ है।

ऑस्ट्रेलिया लगभग चार हज़ार किलोमीटर चौड़ा है और उत्तर से दक्षिण इसकी लंबाई 3700 किलोमीटर है। इस देश का कुल क्षेत्रफल 76 लाख 59 हज़ार 861 वर्ग किलोमीटर है। देश की राजधानी कैनबरा है।

यहाँ के मूल निवासियों को आदिवासी कहा जाता है। जो पिछले साठ हज़ार साल से यहाँ बसे हुए हैं और यह 600 से अधिक जनजातियों में बँटे हुए हैं। उनकी आबादी तीन लाख के करीब बताई जाती है।

ऑस्ट्रेलिया में अहमदियत की शुरुआत हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम के एक सहाबी हज़रत हसन मूसा खान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो के द्वारा 1903 ई. में हुई। आप रज़ियल्लाहु अन्हो अफ़गान कबीला 'तरीन' से संबंध रखते थे और 1901 ई. में ऑस्ट्रेलिया आकर बस गए और 1903 ई. में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम की बैअत का सौभाग्य प्राप्त किया। और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने 4 सितम्बर 1903 ई. को बैअत का पत्र लिखा। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ओर से इस बैअत की स्वीकृति का पत्र 3 अक्टूबर 1903 ई. को हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो सियालकोटी ने भेजा। इस लिहाज से आपको यह गौरव प्राप्त है कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ओर से ऑस्ट्रेलिया भेजा जाने वाला पहला पत्र आपके नाम था।

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो को यह भी गौरव प्राप्त है कि आप भारत के बाहर वसीयत प्रणाली में शामिल होने वाले पहले वसीयत करने वाले थे। 20 दिसम्बर 1905 ई. को हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ओर से पुस्तिका अल वसीयत का प्रकाशन हुआ था। हज़रत हसन मूसा खान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने तीन महीने से भी कम समय में यानी 13 मार्च 1906 ई. को वसीयत करके इस खुदा तआलीय प्रणाली में शामिल होने की सफलता पाई।

आप विभिन्न शहरों में दौरे करके अल्लाह की ओर बुलाने का कर्तव्य निभाते रहे। 1921 ई. में आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने "The Muslim Sunshine" के नाम से एक उपयोगी और दिलचस्प पत्रिका भी प्रकाशित की।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अल्लाह तआला की ओर से फारसी भाषा में यह प्रकाशना भी हुई थी कि 'ख़ुश बाश कि आक्रिबत निकू ख़्वाहद शुद'

(प्रसन्न रहो कि अंत भला ही होगा)।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो अहमदियत से जुड़ने के बाद अगस्त 1912 ई. और फिर 1913 ई. में कादियान पधारे और फरवरी 1914 ई. में हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो के आदेश पर वापस ऑस्ट्रेलिया पधारे और फिर वफ़ात तक यहीं रहे।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

**1800 3010 2131**

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

**Web.www.alislam.org**

**www.ahmadiyyamuslimjamaat.in**